।। भुरकी ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी
*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| भुरकी ग्रंथ ||

श्री गुरू चरण सरोज में || नवण करू कर जोड ||
राम नाम की भुरकी लेह || सो मेंरे शिर मोड || १ ||

गुरू के चरण कमलों में,मैं हाथ जोडके नमस्कार(नमन)करता हुँ। जो कोई राम नाम की भुरकी लेगा,वह मेंरे मस्तक का मुकुट हैं। || १ ||

ब्रम्हा विष्णु देवता || सिमरे शक्ती महेश ||
राम नाम जा दिन जप्यो || धरणी धरी फनेश || २ ||

(इस राम नामको)ब्रम्हा,विष्णु यह देवता(इस राम नामका)शक्ती,महादेव इस राम नाम का स्मरण करते हैं। इस शेषने जिस दिन,अपने सिरपर धरती को धारण किया,उस दिनसे शेष भी राम नामका जप करने लगा। || २ ||

धर्म सनातन थेट सु || नया पंथ कहे नीच ||
ता गल जवरो फास दे || न्हाके नरका बीच || ३ ||

(यह राम नाम का)धर्म सनातन(आदी से)(पहले से शेष ने अपने सिरपर धरती धारण की,तब से)और यह महादेव भी पहले से राम नाम जपता हैं। महादेव का बीजमंत्र ही राम नाम है,ऐसा यह आदी से चला आया धर्म हैं।(यह ऐसे आदी से चले आए पंथ को),नीच(मनुष्य)नया पंथ कहते हैं। ऐसे नीच मनुष्य के गले में,यम फासी डालके,उसे नरककुंड में डालेंगे || ३ ||

राम नाम सत मंत्र है || पापी कहे फितुर ||
लख चोरासी जुण सो || वे भुक्ते बेसुर || ४ ||

यह राम नाम सत मंत्र है,(प्रेत को ले जाते समय राम नाम सत हैं, ऐसा बोलते हैं।)यह राम नाम ऐसा सतमंत्र हैं,ऐसे मंत्र को पापी मनुष्य फितूर कहते हैं,कैक लोग इस राम मंत्र के धर्म को,फितूर कहते हैं। ऐसा बोलनेवाले बेअकली लोग,लक्ष चौऱ्यांशी योनी भोगेंगे।।४।

प्रगट साचा पंथ कु || ले भुरकी को नाम ||
इण भुरकी सो ऊधऱ्या || सो बरणे सुखराम || ५ ||

ऐसा यह प्रगट रूपसे सच्चा पंथ हैं,(कि जिसे शेष व महादेव राम नामका स्मरण करते और अधिक ध्रुव,प्रल्हादने भी इस राम नामका रटन किया था। वाल्मीकने इस राम नामका रटन करके,सौ कोटी श्लोकोंका,रामचंद्र के जन्म के पहले,कथन किया हैं। ऐसा यह प्रगट रूपसे सच्चा पंथ हैं। उसे लोग भुरकी का नाम देते हैं। लोग ऐसे सच्चे पंथ के संबंध में कहते हैं,कि इनके पास किसीने जाना नहीं,ये भुरकी डालके,जो उनके पास जाता है,उसे अपनासा कर लेते है। लोग हमारे बारे में ऐसा कहते रहते हैं। लेकिन हमारे इस भुरकी से जिनका-जिनका उध्दार हुआ,उनका वर्णन मैं करता हुँ। || ५ ||

कोई कहे पाखन्ड कोई कहे भुरकी || कोई केहे मोय फेनी ||

राम भक्त को मरम न जाणे ।। देखो जक्त अग्यानी ।। ६ ।।

ये जगत के लोक अज्ञानी है। ये राम नाम भक्ति का मर्म तो जानते नही इसलिये संसार के कुछ लोग मुझे पाखंडी कहते है। तो कुछ लोग भुरकी याने वश करनेवाला कहते है। तो कुछ लोग फैनी याने फैन चलानेवाला कहते है। ।।६।।

मैं पाखंन्डी मैं पाखन्डी ।। अेसा पाखंड मेंरे ।।
राम सिंवरता बोर न फिरसी ।। लख चोरासी फेरे ।। ७ ।।

मैं पाखंडी हुँ,पाखंडी हुँ,मै जीवोको रामनाम का स्मरण करने लगाता हुँ यह मेंरा पाखंड है। जीवोको रामनाम का स्मरण कराके लक्ष चौऱ्यांशी योनीमें बार बार आनेका फेरा सदाके लिये खतम् करा देता हुँ। ऐसा मेंरा पाखंड हैं।।७।।

मैं फेनी बाबा फेनी ।। मैं तो अेसा फेन चलाऊँ ।।
लख चोरासी जीव पडत हे ।। ज्यां कुं मोख मिलाऊँ ।। ८ ।।

मैं फैनी हुँ। बाबा मैं फैनी हुँ। मैं ऐसा फैन चलाता हुँ की जो जीव चौऱ्यांशी लक्ष योनीमें उपजते खपते,महादु:ख पाते उनको उपजने खपनेके महादु:खके फेरे निकालकर मोक्ष में याने महासुख मिलाता हुँ। ।।८।।

भुरकी सन्तो भुरकी मेंरे ।। ज्या में फेर न सारा ।।
जो लेवे तांही में डारूं ।। जुग सुं कर दुँ न्यारा ।। ९ ।।

लोग मुझे भुरकी डाली ऐसा कहते हैं,तो संतो मेंरे पास सच्ची भुरकी है उसमें कुछ फेर फार नहीं लेकिन यह भुरकी जो कोई लेगा उसीमें ही डालता हुँ और उसे इस दु:ख के जगत से अलग कर देता हुँ। मै यह भुरकी लेनेवाला लेता हैं तभी मैं देता हुँ और महासुख के जगत में भेजता हुँ। ।।९।।

इण भुरकी सनकादिक भरम्या ।। साध संगत ही भावे ।।
सूत कथा सुण जाय पयाळा ।। सांज बेंकुठा धावे ।। १० ।।

इस भुरकी में सनकादिक ये चारो भाई भ्रम गए हैं इनको सिर्फ साधुकी संगत ही अच्छी लगती हैं। सत्संग करनेके लिए रातदिन त्रिलोकी में ये घुमते रहते हैं। वे आधी रात को सुतकी कथा सुनने पातालमें जाते हैं। फिर दोपहर को सत्संग सुनने यहाँ मृत्युलोगमें आते हैं और वहाँ से शाम को वैकुंठ में संगत करने दौडते हैं। इस तरह से सनकादिक इस भुरकीसे भ्रमित होकर रातदिन घुमते रहते।।।१०।।

आ भुरकी शंकर उर धारी ।। जग में निर्भे होई ।।
पारबती के नही आ भुरकी ।। मर मर जावे सोई ।। ११ ।।

इस रामनाम के भुरकी के योगसे महादेव इस जगत में निर्भय हुआ हैं। यह रामनामकी भुरकी पहले पार्वती के पास नही थी,इस कारण वह मर जाती और शंकर रामनाम के भुरकी से महाप्रलय तक अमर हो गया। ।।११।।

लिछमण राम बिचारी भुरकी ।। वशिष्ट मुनि पे आया ।।
सतगुरू किरपा कर ले दिनी ।। केवळ माय मिलाया ।। १२ ।।

लक्ष्मण और रामचंद्र यह दोनो ने ही वशिष्ट के पास आकर वशिष्ट से रामनाम की भुरकी धारण की। वशिष्टमुनी रामचंद्र और लक्ष्मण के सतगुरू बनकर इन दोनोको रामनाम की भुरकी दी और उनको महासुख के कैवल्य में मिला दिया ।।१२।।

हनुमान सीता के भुरकी ।। लिछमण कुं फेर दीनी ।।
तीनु चूर चडया गढ चोथे ।। पूंछया प्रगट कीनी ।। १३ ।।

और सीताने यह भुरकी मारूती को दी और यही भुरकी जानकीने लक्ष्मण को दी(वह पद रत्न संग्रह में पान नं. ९३ में छपा हैं,वह देखना।)यह ज्ञान सीताने जमिन में जाते समय लक्ष्मण को बताया। ये हनुमान और लक्ष्मण कालके तीन पद को छोडकर महासुख के चौथे पदपर चढ गए। उन्होने सीता से पुछा तब उसने हनुमान और लक्ष्मण में प्रगट की। ।१३।

गोपीचंद भरतरी दोनुं ।। गोरख चरणा लागा ।।
ज्युं आ भुरकी ही त्युं लीनी ।। जुरा मरण भो भागा ।। १४ ।।

गोपीचंद और भरतरी इन दोनो ने इस भुरकी के लिए अपना राज पाट त्यागा और सतगुरू के चरणो में जाकर लगे। ऐसी यह भुरकी है। गोपीचंद और भरतरीने यह भुरकी धारण करनेसे गोपीचंद और भरतरीका बार बार बुढापा आनेका और मरनेका भय मिट गया।।१४।।

मछन्दर के आही भुरकी ।। ठिकर ले उर धारी ।।
कतर स्याम आ भुरकी ले कर ।। च्यारूं धात बिड़ारी ।। १५ ।।

मच्छिंद्रनाथ के पास यही भुरकी हैं और ठिकरनाथने यही भुरकी हृदय में धारण की हैं और कार्तिक स्वामी ने भी यही भुरकी लेकर माता से प्रगटे हुये मायावी चार धातु को तनसे निकाल डाला है। ।।१५।।

दत्त डिगम्बर के आई भुरकी ।। हस्तामल पे आया ।।
बारा बरस मोन में बीता ।। भुरकी न्हाक बोलाया ।। १६ ।।

दत्तात्रेय के पास भी यही भुरकी थी। दत्तात्रयने हस्तामल को यही भुरकी दी। हस्तामल बारह वर्ष का हुआ तब तक किसी से भी एक शब्द भी बोला नही,उस हस्तामल पर दत्तात्रयने यह भुरकी डालके उसे बोलने को लगाया ।।१६।।

शंक्रा चारज बिरामण होता ।। जीवण मरण की केंता ।।
दत्त डिंगम्बर बाइं भुरकी ।। बेद छाड़ीया बेता ।। १७ ।।

शंकराचार्य यह ब्राम्हण था। यह शंकराचार्य जीनेकी और मरने की बात पहलेही बता देता था। इस शंकराचार्य पर भी दत्तात्रयने भुरकी डाली तब उस शंकराचार्यने चलते चलते वेदोका त्यागन किया और रामनाम लेने लगा। ।।१७।।

जन प्रल्हाद पढ न कूं जातां ।। श्री यादे समझाया ।।
भुरकी पड़ी तजी बंस बिद्या ।। राम नांव लिव लाया ।। १८ ।।

श्रीयादेने संत प्रल्हादको पाठशाला जाते समय यह भुरकी समझायी। प्रल्हादपर इस रामनाम की भुरकी पडते ही उसने अपने कुलकी याने राक्षसकी विद्या छोडके,रामनाम की लव लगा ली। ।।१८।।

भुरकी में भरम्यो बो भारी ।। मात पिता गुरू पाल्यो ।।
कर कर धेक खप्यो कुळ सारो ।। युं भुरकी घर घाल्यो ।। १९ ।।

वह प्रल्हाद इस भुरकी में ऐसा भारी भ्रमा की उसे उसके माँ बापने व गुरूने यह रामनाम लेने के लिए मना किया तो भी उसने यह रामनाम की भक्ति छोडी नही। उसके कुलके लोग उसका धेष(द्वेष)कर करके सब खप गए तो भी उसने रामनाम की लेनेकी भुरकी छोडी नही,ऐसा रामनाम के भुरकी ने प्रल्हादको घेर लिया ।।१९।।

दस हजार होता दक्ष पुतर ।। राज काज बन आया ।।
मेंल्या मुक्त मिल्या गुरू नारद ।। युं भुरकी भरमाया ।। २० ।।

दक्ष राजा के दस हजार पुत्र थे,वे राज्य प्राप्त करने के लिए वनमें जाकर तपश्चर्या करने लगे। उनके उपर नारदमुनीने यह भुरकी डाली। नारदमुनी गुरूने दस हजार पुत्रोंपर भुरकी डालकर भरमा दिया और दक्ष राजाके दस हजार पुत्रोको मुक्ति को भेज दिया।।२०।।

दियो सराप सयो रिष नारद ।। भुरकी पग पसाऱ्यां ।।
तीन लोक में फिर फिर डारे ।। केता जीव उधाऱ्यां ।। २१ ।।

दक्षपुत्रोंको नारदने भुरकी डालके भरमा दिया इस कारण दक्षराजाने नारदमुनी को शाप दिया, की तुझे एक जगह रूकनेका समय मिला इसलिये तुने मेंरे पुत्रोको भरमा दिया। अब तु त्रिलोक में भ्रमण करता रह,एक जगह तु यदि खडा रहा तो तेरे शरीर को ज्वाला लगेगी,ऐसा दक्षने नारदमुनीको शाप दिया,अब यह नारदमुनी तीन लोग में घुमता भुरकी डालते रहता हैं,इसतरह नारद दक्ष का शाप सहन करके,इस भुरकी को फैला रहा हैं और कित्येक जीवोंका नारदने उध्दार किया।।२१।।

राजा जनक होम जीग करतां ।। कहो जोगेश्वर आवे ।।
प्रोयत अगन मिल्या उठ सामा ।। युं भुरकी भरमावे ।। २२ ।।

एक समय जनक राजा यज्ञ करते समय होम कर रहा था तब किसीने आकर बताया कि नऊ योगेश्वर आ रहे हैं तब जनक राजा बोला योगेश्वरोंको मिलनेके लिए सब जन सामने चलो,तब सब सामने गए,किंतु होम करनेवाले पुरोहित बोले,हमारा इष्टदेव तो अग्नीदेव हैं,इस हवन कुंड के अग्नीको छोडकर हम नौ योगेश्वरोंके सामने नही जायेंगे वह होमका अग्नीकुंड उठके योगेश्वरों के सामने रवाना हुआ,तब होमके अग्नीकुंडके साथ पुरोहीतो को भी नौ योगेश्वरोंके सामने जाना भाग पड़ा। इसतरहसे नौ योगेश्वरों के भुरकीसे सबको और

अग्नीदेव को भी भरमा दिया।।२२।।

दान पुन्न करतां दिन बीता ।। भक्त बीज नही ऊगा ।।
नो जोगेश्वर भुरकी न्हाकी ।। पाय ग्यान पद पुगा ।। २३ ।।

जनक राजा के दान पुण्य करते करते दिन व्यतीत हुए लेकिन जनक राजा में केवली भक्ति का बीज उगा नहीं। जब नौ योगेश्वरोंने आकर इनमें भुरकी डाली तब नौ योगेश्वरोंका केवल ज्ञान जनक राजा को मिला तब यह जनक राजा पदको पहुँचा। यह जनक राजा निमी नामक था। ।।२३।।

बेद ब्यास का सुत सुखदेवा ।। ग्रह तज बन बसाया ।।
आगम निगम झुठ जग जाण्यो ,भुरकी तेज बधाया ।। २४ ।।

व्यास का बेटा सुकदेव बाद्रायणी यह जन्मते ही घर छोडके वन में गया और बनमें ही रहा। उसने वेदके अगम निगम के विद्या को और जगत को झूठा समझा। और जनक राजा से रामनाम की भुरकी धारण कर अपना तेज याने मोक्षका ज्ञान बढाया।।।२४।।

अमरीष राजा बढभागी ,सत अेक व्रत नारी
भुरकी सुण दुर्वासा कोप्यो ।। लग्यो चकर जिण लारी ।। २५ ।।

अमरिश राजा बड़ा भाग्यवान था। उसको एक सो एक स्त्रियाँ थी। अमरिश राजा के पास भुरकी है ऐसा सुनके इसपर दुर्वासने कोप किया,तब दुर्वासा के पिछे चक्र लगा,इसकी कथा पहिले विभाग में साध–सिध्द परीक्षा के अंग के पाँचवे श्लोक में आयी हैं वह देखो।।२५।।

बाष्ट मुनि अरू अरूध्वंती से ।। तण ब्रत भुरकी लीनी ।।
बिश्वामित्र छुडाई बिच में ।। जूण अधोगत दिनी ।। २६ ।।

वशिष्ट और उसकी स्त्री अरूंधती के पाससे त्रिशंक राजाने भुरकी धारण की। विश्वामित्रने उस त्रिशंकु राजासे यह भुरकी बिचमें ही छोडने लगाई इस योग से वह त्रिशंकु राजा अधोगती जूण में गया। ।।२६।।

राजा रहुं चल्यो गुरू करणे ।। कासी कपील बेरागी ।।
जड़ भरत बोल सुणाई भुरकी ।। अध बिच सेन्या त्यागी ।। २७ ।।

और सिंध देशका रहु राजा कपीलमुनी को गुरू बनाने के लिए काशी को निकला,उस रहु राजाको गोंडवाण्यात जडभरत मिले।(वे रहु राजाके पालखीको जोते हुए एक भोई का पेट दुखने लगा,इसलिए पालखी के लिए दूसरा आदमी लाने के लिए भेजे हुए लोगों ने खेत में खडे हुए जडभरत को लाके पालखीकों जोता,तो जडभरत पालखी को लेकर एक साथ दौड़ता,तब बाकी के भोई निचे गिर जाते और पालखी भी नीचे आ गिरती,तब रहु राजा और जडभरत की बात हुई),तब रहु राजाको जडभरतने बोलके भुरकी बताई। वह भुरकी रहु राजापर पडते ही रास्ते में ही रहुराजाने पास में के सभी सैन्यका त्याग किया ।।२७।।

गोरख की भुरकी भरमाया ।। क्रोड निनाणु राजा ।।
राज पाट राण्यां सुत त्यागा ।। बाजे प्रगट बाजा ।। २८ ।।

गोरक्षनाथने निन्यानवे कोटी राजाओंको भुरकी डालकर भरमा दिया। उन निन्यानवे कोटी राजाओंने इस भुरकी के लीये अपना राज और पाठ(सिहांसन)रानीयाँ और राजपुत्र सब छोड दिये । ये जगतमें बाज बने सरीखे प्रगट हैं। ।।२८।।

बालमिक बोहो करम कमाया ।। कोटक जीव संगाऱ्यां ।।
नारद रिषी ले भुरकी न्हाकी ।। राम ही राम पुकाऱ्यां ।। २९ ।।

और वाल्मीक(कोली)था। इसने कई कर्म लिए कि उसने लक्ष जीवोंका संव्हार किया,एक दिन नारदमुनी उसे उपदेश देने लगा,ऐसे तुने इतने जीव मारके यह पाप किया है,तो यह तुझे भोगना पडेगा,तब तुझे कौन बचाऐगा?तब वाल्मीक बोला,मेंरी पत्नी हैं,मेंरा बेटा है,मेंरी माँ है, मेंरे पिता हैं इनके लिए मैं जीवोंको मारता हुँ,इसलिए यह पाप वे भोगेंगे,तब नारदमुनीने कहा अरे यह तो सब खाने के साथी हैं। तेरे किए हुए पापमें हिस्सा लेनेवाला इनमें से कोई भी नहीं । तुझे इस मेंरी बात का विश्वास नही आता तो तु जाकर उनको पुछ ले,तब वाल्मीक बोला,हा हा अच्छा छाकटा मिला,मुझे उधर पुँछने के लिए भेज और इधर तु भाग जा तब नारदमुनीने कहा,अरे मैं भागुँगा नही,तुझे विश्वास नही है,तो मुझे इस पेड़ को बाँध दे और जाकर पुछकर आ,लेकिन ऐसा पुछ की,मैंने तुम्हारे लिए मनुष्यो की मारके हत्या कि है तो मेंरे इस पाप का भोग भोगने के लिए तैय्यार हो और कौन भोगेगा वह बताओ,ऐसा सबको जाकर पुछ। बाद में वाल्मीक ने नारदमुनीको रस्सीसे मजबुत पेड़ को बांधा और घर जाकर अपने पत्नी को बोला, तेरे लिए मैंने यह पाप कर्म किया है,वह भोगने के लिए चल,तब उसकी पत्नी बोली,आपने यह पाप कर्म किसलिए किया,मैंने आपको कब कहा था की मेंरे लिए ऐसा पाप कर्म करके कमाके लाना,मुझे तुम कहाँसे भी खाने को ला दो,कुछ करके दो,मैं तुम्हारे पाप कर्म की जिम्मेंदार नहीं,मैं तुम्हारे पिछे आई हुँ,तो मेंरा पोषण करना तुम्हारा काम हैं,तुमने उधर कुछ भी करके लाया तो भी भोगने के किए चलुँगी नही। फिर वाल्मीक अपने पुत्र के पास गया और बोला,मैं तुम्हारे लिए पाप कर्म करके कमाके लाता हुँ,उस पाप का भोग तुझे भुगतना पड़ेगा,बेटेने कहाँ–तुम्हारे किए हुए पाप को मैं जिम्मेंदार नही,तुम जैसे करोगे वैसे भोगोगे,मैं तो खानेवाला हुँ और इसके बदले मैं तुम्हे तुम्हारे बुढापे में रोटी देकर इसका कर्जा चुकाकर तुम्हारा बदला चुका दुँगा लेकिन तुम्हारे पाप कर्म तो मैं भोगुँगा नही। फिर वह अपने बाप को किए हुए पापका भोग भोगने के लिए बोला,तब बाप ने कहा,अरे तेरे किए हुए पाप का फल मैं,किसलिए भोगुँगा तू कैसे भी ला और मुझे खाने को दे,तुझे मैंने बचपन में खिलाया था उसके बदले में तु मुझे खाने को देता हैं,मैं तो मेंरे,तेरे उपर किये कर्ज वसुल कर रहा वह तु चुकता कर रहा हैं फिर तेरे किए हुए पाप में मेंरा क्या संबंध हैं,फिर माँ के पास जाकर बोला मैंने

तुझे खिलाने के लिए पाप कर्म किया वह पाप तु अब भोगने कि लिए कबुल कर,वह बाली,अरे तेरे शरीर की चमडी निकालकर मेंरे पैरों के जुते किए तो भी तु मेंरेसे ऋण मुक्त नही होता। मैंने तुम्हे नौ मासतक गर्भ में रखकर बोजा ढोया,जन्मतेही दुध पिलाया,तेरा हगणा,मुतना सब धोया। तेरा कुछ दुखने लगा तब मेंरे जीवसे भी जादा कष्ट सहन किया,तुझे अच्छी जगह सुलाकर और मैं गिली जगह सोई। तुझे बचाने के लिए थंडी धुप मैंने सहन करके तेरा मेंरे जीवसे जादा बचाव किया इत्यादी ये मेंरे तेरेपर किए हुए उपकार तुने कुछ भी किया तो तेरेसे मिटेंगे नही फिर तु किए हुए पाप मुझे भोगने के लिए किस मुँहसे कहता हैं।(मेंरा दो रोटीयोंका और एक वस्त्रका तेरे पर हक हैं वह तु कहा से भी कैसे भी ला के दे,तब तु मेंरेसे उऋण होगा इसतरहसे चारोंका जबाब लेकर वाल्मीक नारदमुनी के पास आया और बोला–तुमने बताया वैसे घरके सभी खानेवाले हैं परंतु पाप बाटनेवाला कोई भी नही तो अब मैं क्या करूँ,मेंरा यह पाप किससे मिटेगा?तब नारदमुनीने कहा एक जगह बैठकर रामनाम का जाप जप,तब तेरा सब कर्म मिट जायेगा तब वाल्मीक बोला मैं तो मारा मारा करके जीवको पकडने के लिए दौड़ता था तब जीव मरा ऐसा कहता था। इसलिए मेंरे मुँह से रामनाम,राम कुछ निकलता नही। मेंरे मुँह से तो मारा मारा निकलता तब नारमुनीने कहा–ऐसा ही जाप जपते जा तब वाल्मीकके मुखसे तीन बार मारा मारा निकला चौथी बार रामनाम की ध्वनी लग गई। ऐसी नारदमुनीने वाल्मीक पर भुरकी डालतेही वाल्मीक राम ही राम पुकारने लगा। वह इस भुरकी के कारण भ्रम के बैठ गया उसपर उधईने उसे खाके बाँबी बना दिया इस प्रकार वाल्मीकपर बाँबी बढ गया। इस तरहसे चौबीस वर्ष निकल गए। चौबीस वर्ष के बाद नारदमुनी वहा आए और वाल्मीक को मैंने यहाँ बिठाया था ऐसी याद आई तब बैठाए हुए जगह पर बाँबी देखकर नारदमुनी बाँबी के पास गए और बाँबी के पास कान देकर सुनने लगे तो बाँबी से रामनाम की ध्वनी निकल रही थी तब बाँबी को फोडकर वाल्मीक को बाहर निकाला और वाल्मीक को वरदान मागने के लिए कहा तब वाल्मीक ने रामायण करने का वरदान माँगा।।२९।।

मरू मरू केता भया मुनी ।। राम कहया क्यो नही होई ।।
बालमित यो संख बजायो, जिग राज सु जोई ।। ३० ।।

यदी उलटा शब्द मरा मरा बोलनेसे मुनी बन गया तो सुलटा शब्द रामनाम रटण करनेवाले क्यों नहीं बनेंगे?ऐसा ही दूसरा वाल्मीतने पांडवोंके राजसूय यज्ञ में पंचायन शंख बजाया था। उसकी कथा पहले विभाग पान( )में आयी है,वह पान में देखो ।।३०।।

परीक्षत कुं सिंगी रिष श्राप्यो ।। कुळ म्रजाद मिटाई ।।
सात दिवस में सत गत पुंथो ।। सुखदेव भुरकी बाई ।। ३१ ।।

परिक्षित राजाको श्रृंगी ऋषीने अपनी कुल मर्यादा मिटाने प्रित्यर्थ शाप दिया,वह परिक्षित

इस भुरकीके योगसे सात दिन में सतगती को जा पहुँचा। उस परिक्षित राजापर सुकदेव ब्रादायणी ने भुरकी डालके उसे रामनाम का जप करने को कहा। परिक्षित मृत्यू का शाप सुनके मरनेसे डरा इसलिए उसे सुकदेवने भागवत सुनाके उस भागवत में ऐसी कथाएँ दिखाई की बडे बडे हो गए वे सब मर गए और मरनेसे जीव कुछ मरता नही। हम जैसे नया अगंरखा पहनते उस तरह से पुराना शरीर छोड्कर नया धारण करते,यह पुराना अंगरखा डालके नया अंगरखा पहनने जैसा हैं। तेरे से बहुत बडे बडे हुए वे भी मर गए,ऐसा भागवत में परिक्षित को बताके उसे मरने का डर लगता था वह उसका भय मिटा दिया और सात ही दिन रामनाम रटन करने को लगाया। साप के काटनेसे मरनेवाला अगती में जाता हैं लेकिन यह परिक्षित राजा रामनाम का रटन करके अगती को न जाते हुए मुक्ति में गया। ।।३१।।

खट दलीप राजा के भुरकी ।। सन्त कृपा कर दीनी ।।
आई मृत्यु सुणी दोय मोहोरथ ।। तुरत प्रमगत चिन्ही ।। ३२ ।।

ऐसे ही षटवांग राजाको वशिष्ट मुनीने कृपा करके रामनाम की भुरकी दी। उसे भी दो मुहर्त में मृत्यू हैं ऐसे समजा। समजने पर वह वशिष्ट मुनी के पास आकर रोया। उस षटवांग को भी रामनाम का जाप करने के लिए वशिष्ट मुनीने बताया,इस भुरकी से षटवांग राजाको तुरंत परमगती मिली। ।।३२।।

इण भुरकी पेकंबर ताऱ्यां ।। सांई लोक सु ग्यानी ।।
रिषभ देव तिथंकर ताऱ्यां ।। भरत भरत की राणी ।। ३३ ।।

इस रामनाम के भुरकी ने पैगंबर को तारा और सुज्ञानी साई लोगको तार लिया। इस भुरकी से वृषभदेव तिर्थंकर ने अपना पुत्र भरत और भरत की रानी को तारा। ।।३३।।

चोइसो भगवंत ऊधारे ।। नव करोड नर नारी ।।
काग भुसन्ड इण भुरकी कारण ।। देह काग की धारी ।। ३४ ।।

इन चौबिस तिर्थंकरोने नौसो लक्ष स्त्री-पुरूषोंका उध्दार किया। एक समय काग भुषूंडी का जीव महादेवकी सेवा कर रहा था,उसके गुरू वहाँ आये उसने अपने गुरू का आदर न करते बैठाही रहा इसलिए महादेवको गुस्सा आया व क्रोध करके बोला,गुरू का आदर न करते मेंरा ही जप करते बैठा,तो तू कौआ हो जा,यह शाप दिया। इसके गुरूने यह शाप सुनके महादेवकी प्रार्थना की और महादेवको प्रसन्न कर लिया और महादेवसे इतनी सवलत कर ली तो महादेव बोला ये मेंरे शाप से कौआ बना तो भी कौअें का कष्ट नही होगा ऐसे इस भुरकी के लिए कागभुषूंडीने कौअे का देह धारण किया।।३४।।

रूम रिषी भुरकी में भीना ।। अमर शब्द लिव लाया ।।
काग भुसन्ड कुं निर्भे किया ।। मोह न ब्यापे माया ।। ३५ ।।

लोमेंश ऋषी इस भुरकी में ऐसा भिन गया की उसने अमर शब्दसे लव लगा दी और

लोमेंश ऋषीने कागभुषूंडी को,कागभुषूंडी जहा होगा वहा उसके आसपास मोहा माया नही आयेगी ऐसा निर्भय बना दिया । ।।३५।।

शेष नाग या भुरकी सुमरे ।। रसना दोय हजार ।।
लागे नही भार वसुधाको ।। विश्वामित्र विचार ।। ३६ ।।

और शेषनाग इसी भुरकी से दो हजार जीव्हा से स्मरण करता हैं,उस शेषको पृथ्वी का बोझ कुछ भी मालूम नही होता। इसी भुरकी के योगसे पृथ्वीका बोझ विश्वामित्रने अपने सिरपर ले के देखा,तब विश्वामित्र ने भी यह भुरकी पुछके धारण की,विश्वामित्र की बात पान( )में देखना ।। ३६ ।।

आद ऋषी ब्रम्हाको बुज्यो ।। भुरकी कहो विचारा ।।
मिल्यो न अरथ हरी जब दिनो ।। होई हंस अवतारा ।। ३७ ।।

आद ऋषी(सनकादिक ने)ब्रम्हासे पुछा,पूर्णब्रम्ह प्राप्त करने का मार्ग कौनसा और आत्मा और शिव इनकी उत्पत्ती कैसे हुई,ब्रम्हा विचलित हुए,ब्रम्हा को कुछ सुझ नही रहा था,ऐसा चार वेद का वक्ता,शास्त्र पुराण जाननेवाला,सृष्टी कर्ता,इनकी बुध्दी कुंठीत हुई,इस भुरकी का विचार बोलो,इसका अर्थ ब्रम्हा को मिला नही,तब विष्णूने हंसका अवतार लेकर,इसका जबाब दिया ।। ३७ ।।

आ भुरकी नारद में न्हाखी ।। महा विष्णु बेकुंठा ।।
मिलीया गुरू छुटी चोरासी ।। सतगुरू बिन सब झुठा ।। ३८ ।।

यही भुरकी नारदपर श्री महाविष्णूने डाली। नारद को गुरू मिला नही,नारद की चौऱ्यांशी छुटी, सतगुरू के बिना सब झुठा हैं,यह बात पहिले विभाग में राजा के संवाद में पान( )में आयी हैं ।। ३८ ।।

ऊरगारी मन भया अंदेशा ।। राम राज नर रूपा ।।
वाइस राज सुणाइ भुरकी ।। तब दरस्या सुर भुपा ।। ३९ ।।

उद्गीर के मन में संशय आया,राम राज्य नर रूप( )वायस राजाने(गरूडने)भुरकी बतायी, तब इंद्र दिखा ।। ३९ ।।

भुरकी गजानन्द सुण पाइ ।। कुण बडपन गण ओली ।।
पचास क्रोड पृथ्वी परदिक्षणा ।। ऊभे अंक अे दोली ।। ४० ।।

यही भुरकी गणपतीने सुनी,इन देवगणोकी पंक्ती में बडा कौन?ऐसा एक अलग वाद उत्पन्न हुआ,उसमें ऐसा तय हुआ की,जो इस पृथ्वीको प्रदक्षिणा करके पहले आयेगा,वही बड़ा,तब सब देव अपने-अपने वाहनपर बैठकर,पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करने के लिए निकले, जैसे विष्णू गरूडपर,ब्रम्हा हंसपर,महादेव नंदी पर,इंद्र ऐरावतपर,सुर्य सात मुँहवाले घोडे पर बैठकर,देवी सिंहासनपर, सरस्वती और कार्तीक स्वामी मयुरपर,यमराज हल्या पर,इस तरह से सब अपनी-अपनी सवारी पर बैठकर निकले। लेकिन गणपतीका सवारी चूहा

था,फिर गणपतीने र और म ऐसे दो शब्द(अक्षर)पृथ्वीपर लिखे,उसे प्रदक्षिणा करके,सबके पहले आकर बैठ गया। इस तरह से यह पचास कोटी पृथ्वीकी प्रदक्षिणा गणपतीने की,इस भुरकी का महत्व गणपतीने जाणा,(समझा)। ।। ४० ।।

मारकण्ड मुनी महाप्रलय ।। माया मना बिलासी ।।
भीङ पडी जब सुमरी भुरकी ।। अमर भया अविनाशी ।। ४१ ।।

एक बार मार्कडेंय मुनीने हरीको कहा,प्रभू तेरी माया मुझे बता,तब हरी बोले,मेंरी माया देखो मत,मेंरी माया न देखनेमें ही अच्छापन हैं,यह मेंरी माया तेरी मती हरण कर लेगी। मार्कडेंय ने कहा,मुझे आपनेही वरदान देकर अमर किया और तुम्हारी माया मेंरा क्या बिघाड लेगी। तब हरी बोले,अच्छा हैं,देखो। फिर प्रलयके सिवाय प्रलय होते हुए,उसे दिखा। हाथी की सूँड के धार जैसा पानी आकाशसे गिरने लगा और पानीके लहरो जैसा, पानी आते दिखा,तब सब पृथ्वी जलमय हो गई,तब मार्कडेंय ऋषी जल में डूबकर,कभी पूरब तो कभी पश्चिम,तो कभी उत्तर,तो कभी दक्षिण की तरफ बहने लगा,तब उसे मगर खाने लगे और कब भी मछली गिरने लगी,इस प्रकार मार्कंडेय मुनी दु:खी होकर विव्हल हुआ,तब उस भुरकी का स्मरण किया,तब तो मार्कंडेंय मुनी अमर होकर अविनाशी हो गया।। ४१ ।।

अगस्त मुनी इण भुरकी सु ।। खल कु भक्षण किया ।।
भागो चोर शरण समुद्रकी ।। तीन चुल भर पिया ।। ४२ ।।

अगस्तमुनी के पास यही भुरकी थी,अगस्ती मुनीने इस भुरकी के योगसे राक्षस भक्षण किया,(राक्षस को खा लिया),उसमें से एक राक्षस भाग के समंदर के शरण गया,तब अगस्ती मुनीने समंदर को अपना चोर मांगा,तब समंदर के शरण में आने के बद्दल,शरण में आए हुए दूसरोंको देनेके लिए नकार दिया,समंदर बोला,शरण में आए हुए शरणागत को मैं दूँगा नही,तब अगस्ती मुनीने समंदर तीन चुलमें पी लिया। तब समंदरके बडे-बडे से जीव,पानीके सिवाय तिलमिलाने लगे,तब अगस्त मुनीने समंदर का पिया हुआ पानी, पिसाबद्वारा फिर से समंदर में डाला,वह समंदर का पानी आज तक खारा हैं।। ४२।।

मुनी यागबल के या भुरकी ।। भारद्वाज कु भाखी ।।
शिवरी भक्त सुतीक्षण पाई ।। भृगु बृहस्पती साखी ।। ४३ ।।

और यानवल्क्य मुनी के पास यही भुरकी हैं,इसने भारद्वाज ऋषी को बतायी और शबरी भिलीन इसको भी भुरकी मिली। उसके चरण स्पर्श से गोदावरी का पानी निर्मल हुआ और सुतिक्षण को अगस्ती मुनीने बतायी और भृगुऋषी और बृहस्पती इसको साक्ष हैं।। ४३ ।।

चवदे मुनी भया चिरंजीव ।। अेताहि भुप मनन्तर ।।
भुरकी जपी जके जन सिद्धी ।। अेसा ही वैद्द धनन्तर ।। ४४ ।।

इस भुरकी के योगसे चौदा मुनी चिरंजीव बने और चौदाही राजे हुए और चौदाही मनंतर

हुए,जिसने-जिसने भुरकी का जप किया,उनके सिध्दी हुए,वैसे ही धनंतर(धन्वंतर)वैद्य हुए।।४४ ।।

गोकरण ऋषी सुण ज्यो ।। भुरकी धुंधमार कु दिनी ।।
अंश वश पुरूष हुंता अगती ।। सब की मुक्ती किनी ।। ४५ ।।

सुकदेवने जैसी परीक्षीत को दी,उस जैसी ही गोकर्णाने धुंधकारी को दी। उस गोकर्णा के वंश के धुंधकारी के योगसे,सबही अगती को प्राप्त हुए थे। उन सबको गोकर्णाने गती को भेज दिया। यह कथा भागवत में हैं ।। ४५ ।।

दया ऋषी मुनी पुन दुज पुत्री ।। राम नाम सत जाण्यो ।।
तीन बेर कह सुपज कियो ।। सुच ताको दोष बखान्यो ।। ४६ ।।

दयामुनी(वशिष्ट का बेटा)इसने,गोहत्या करनेवाले ब्राम्हणको,तीन बार राम नाम कहलाने के कारण,वशिष्ट ने उसपर क्रोध करके,उसे सबसे निच भिल्लका शरीर धारण करनेका शाप दिया। वही वशिष्ट का बेटा दयामुनी गोभिल्ल बनकर,रामचंद्र के बनवास के समय, चित्रकुट में आया,तब वशिष्टने उसका आदर किया था। ऐसे ही ब्रम्हचारीकी पुत्री ब्रम्हचारणीने,तीन बार राम कहलाकर,श्वपच को शुध्द किया,वही दूसरा वाल्मित पांडवोंके राजसुय यज्ञ में पंचायन शंख बजानेवाला,यह कथा पहिले विभाग में आयी हैं,वह देखना ।।४६।।

कपिल देव मुनी कर्दम के ।। ग्यान दियो माता कु ।।
अष्टावक्र उदर में बैठा ।। परू तर कियो पिता कु ।। ४७ ।।

कपील मुनी यह कर्दम ऋषीका लड़का था। उसने इस भुरकी के योगसे गुरू बनके,अपनी माता देवहुतीको ज्ञान दिया और इस भुरकी के योगसेही अष्टावक्र अपनी माता के गर्भसें से ही,अपने बाप को प्रत्युत्तर दिया। अष्टावक्र अपनी माताके गर्भ में था,उसका बाप वेद पठन करते समय,अशुध्द पाठ कर रहा था। उसे अष्टावक्रने अशुध्द पाठ क्यों करता,ऐसा कहा,यह बात अष्टावक्रके बाप को बुरी लगी,उसने उसे शाप दिया की,तु अभीसे इतना वक्र हैं,की,(हेकोडा हैं)तो जा,तेरा शरीर आठ जगह(हेकोडा)वक्र हो जाये,तब उसके बाप का वचन सत्य हो गया और यह आठ जगह वक्र होकर जन्मा। अष्टावक्रने वेदाध्यन किया। उन दिनो,जनक राजा के यहाँ एक पुरोहीत था,उस पुरोहीतने यह नियम किया,कि मुझसे जो चर्चा में हारेगा,उसे पानी में डूबा दूँगा। ऐसे बडे से बड़े पंडित गए,उनको पुरोहीतने पानी में डूबा दिया। उस पुरोहीतने अष्टावक्रके बाप को,मामा को डूबवा दिया। जब अष्टावक्र शहाणा(बड़ा)हुआ,तब उसने सोचा की,मैं उस पुरोहीतसे शास्त्रार्थ करने के लिए जाऊँगा। यह बात सुनकर उसकी माताने जानेसे मना किया, लेकिन उसने माना नही। सीधा जनक राजाके राजसभा में जा पहुँचा,उसके वक्र शरीर को आठ जगह वक्र देखकर,(झूका हुआ देखकर)सभा के पंडित हँसे,तब अष्टावक्र जनक राजाको बोला,

राजा,ये चंभार(मोची)किसलिए जमा किये है,यह सुनकर सब सभासद अष्टावक्रके मुँह की तरफ देखने लगे। राजा ने अष्टावक्रसे कहाँ,तुम सबको चंभार(मोची)कैसे बताया,अष्टावक्र बोला,इन लोगोने मेंरे शरीर के गुणोंकी परीक्षा तो कि नही,सिर्फ ऊपर चमड़ी की परीक्षा की,तो ये चमडी की परीक्षा करनेवाले चंभार(मोची)हैं। फिर अष्टावक्र उस पुरोहीतसे शास्त्रार्थ करके पुरोहीतको प्राप्त किया और उस पुरोहीतको कहा,जिस तरह से तूने सबको पानी में डूबोया हैं,उस तरह से मैं भी तुझे पानी में डूबाऊँगा। ऐसा कहके,उस पुरोहीत को पानीमें खिचके ले गया,तो पुरोहीतने कहा,मैं पानी में डूबुँगा नही,क्योंकि मैं वरूण का दूत हूँ। वरूणराजा एक यज्ञ कर रहे हैं। उनको वहाँ पंडितोंकी जरूरत हैं, इसलिए मैने सब पंडितोंको पानी में डूबोके वहाँ भेजा हैं। वहाँ सब पंडित जीवीत है(जिंदा है)और वरूण जो यज्ञ कर रहे है,अब यज्ञ समाप्त हो गया। उन सब पंडितोंको मैं तुम्हारे सामने लेकर आता,ऐसा कहकर वह पुरोहीत वरूण लोकमें गया और सब पंडितोंको दक्षिणासहित लेकर आया। सब पंडितोंने अष्टावक्रको अलींगन दिया,इस तरह से अष्टावक्र हुआ ।। ४७ ।।

अल्प अवस्था ध्रुव में भुरकी ।। माता सुनिता बाई ।।
छाड्यो राज कियो बन आसन ।। तुठ त्रिभुवन राइ ।। ४८ ।।

कम उम्र में ही(पाँच सालके धृवपर),उसके सुनिती नामके माँ ने धृवपर भुरकी डाली,तब ध्रृवने इस भुरकी के कारण राज्य छोडके,बनमें जाकर आसन लगाके,ध्यान किया,तब त्रिभुवन पती धृवपर खुश होकर,छत्तीस हजार वर्ष राज्य देकर,फिर बादमें अढळ पद दिया।। ४८ ।।

पुत्र कलितर राजा हरिचंद्र ।। संपत सर्व समरपी ।।
बिखो पड्यो पण तजी न भुरकी ।। शंकर काशी बिरपी ।। ४९ ।।

हरीचंद्र राजाने अपनी सब संपत्ती और पत्नी और लड़के को बेचके,विश्वामित्र को समर्पित किया और खुद स्वयंम भी डोंबाको बेचा गया। उस हरीचंद्रपर ऐसे कठीण प्रसंग पडे,तो भी उसने भुरकी को छोडा नही। वह अपने राज्य में न खपते,महादेव के काशी में जाकर वहाँ अपनेको और स्त्री,बेटे को बेच दिया ।। ४९ ।।

भागीरथ नृप सगर वंश में ।। धर पर गंगा आणी ।।
दशरथ राज प्रेम के पातर ।। भुरकी सब जग जाणी ।। ५० ।।

सगर राजाके वंश के भगीरथने,इस धरतीपर गंगा लाई और दशरथ राजा प्रेमके खातीर, (की उस रामके वियोगसे उसने रामके प्रेम में अपना प्राण त्याग दिया),यह बात जगत के सब लोग समझते हैं।। ५० ।।

तिरहुत राज किया कुंड खाली ।। भुरकी में लव लिना ।।
बलीराजा ऋषमांगद भीषम ।। सब भुरकी में भीना ।। ५१ ।।

ऐसे ही इस महीरथ राजाने उस किसान से कहा,तेरे खेत में गाय फसल खा रही हैं,तब उस किसान ने जाकर गाय को मारा,इसलिए वह गाय मर गई,उसकी हत्या महीरथ राजा को लग गई। क्यों कि उसने,उस किसान को तेरे खेत में गाय चर रही,ऐसा कहा,इसलिए किसान ने गाय को मारा और वह मर गई,इस वजह से यह हत्या महीरथ राजा को लग गई। इस राजा का अंत समय आया,तब विष्णु ने इस महीरथ राजाके लिए,अपने पार्षद को विमान लेकर भेजा। विष्णुने राजा को गो हत्या लगी हैं,ऐसा पार्षद को कहा,इसलिए उस राजा को नरकपुरी से लाना,याने वो गो हत्याके पापसे नर्ककुंड भोगते हैं,वह वो सिर्फ आँखो से देख लेगा। वह राजा हरीजन हैं,वह गोहत्या का पाप भोगेगा नहीं,सिर्फ उसको बता दो,की गो हत्या करनेवाले ऐसा दु:ख भोगते हैं,इसलिए वे पार्षद राजाको विमान में बैठाके,यमपुरी से जाने लगे,तब राजाको बडा कोलाहल सुनने को आया,तब राजा पार्षद से पुछने लगा,यह ह:ह:कार शब्द किसका होता हैं,उस पार्षद ने बताया की,यह यमपुरी हैं,यहाँ यमके त्राससे जीव दु:खी होकर रोता हैं। उसका यह कोलाहल हैं,इतनी बात हुई उसी समय यमपूरीपर विमान आया,उस विमान में बैठे हुए संतोकी छायासे,नर्क कुंडके जीवोको शांती मिल गई और गरम हवा की बजाय,शितल वायू चलने लगी और यमदूतका जीवो के उपर क्रोध,कोप करना भी यमदूत भुल गए। तब नरककुंड के जीवोंको शांती मिल गई और कोलाहल बंद हो गया। राजा ने पुछा,वह यमपूरी यही है क्या?और कही दूसरी जगह है,तब पार्षद बोले,यमपूरी तो यही हैं,लेकिन तुम्हारी छाया से,इस नरककुंड के जीवों को सुख शांती मिल गई,इसलिए उनका रोना–चिल्लाना बंद हो गया,तब राजा बोला,मेंरी छाया से जीवोंको सुख और शांती मिलती होगी तो,यह विमान निचे उतारो,मैं ही उस नरककुंड में गिर जाऊँगा,याने ये सब जीव सुखी हो जाएँगे। ऐसा कहकर वह राजा नर्ककुंड में गिरने लगा,तब धर्मराय यह दृश्य देखकर दौडके गए और राजा के उसने पैर पकडे और धर्मराय ने कहा,संतजन ये कही नर्क में पडते है क्या? यह बात तो मैंने आज तक देखी तो क्या,सुनी भी नही,की,संतजन नर्क में गिरते हैं। तब राजा धर्मराय से बोला,वे वहाँ के सब नर्ककुंड खाली कर और आज तेरे यहाँ यमपूरी में जितने जीव हैं,वे सब के सब,मेंरे साथ भेज दे। यमपूरी में एक भी पापी रख मत। तब धर्मराय ने कहा,की यह मर्यादा तो आदी अनादी से हैं,की साधु(संत)आप तीरते और दूसरोंको भी तारते हैं। तो तुम यह कर सकते,यहाँ के यमपूरी के सभी जीवों को तुम अपने साथ ले जा सकते। ऐसा वह महीरथ राजा भुरकी में लवलीन हुआ,यमपूरी की सब ही कथा पद्मपुराण में पाताल खंडके अध्याय २७ में हैं। ऐसे ही इस भुरकी में बलीराजा,रूखानंद,भीष्म ये सब भुरकी में लग गये थे।। ५१ ।।

सतवंती राणी के भुरकी || अंत पार्षद आया ||
ऊदे अस्त लग जीव मुवा सो || सबही मोक्ष सिधाया || ५२ ||

ऐसे ही सत्यवती राणी के लिए,उसके अंत समय पर उसे ले जाने के लिए पार्षद आए,तब उस सत्यवती राणी ने कहा,मैं मेंरे पती के सिवाय विमान में अकेली बैठती नही,तब पार्षदने उसके पती को विमान में बैठने के लिए कहा,तब सत्यवती का पती बोला,मैं राजा हुँ,मैं अकेला कैसे चलूँ,मेंरे साथ चलने के लिए जिनको मृत्यू आयी नही,ऐसे जीवोंको तो मारो मत,लेकिन अपनी-अपनी मौत से आज सुर्योदय से लेकर सुर्यास्त तक,जितने जीव मरेंगे,उन सबको विमान में बिठाकर,यहाँ से ले जाते हुए,धन्य माता सत्यवती,धन्य माता सत्यवती,ऐसा सब लोग जय-जयकार करने लगे। इसतरह उसकी स्वारी अचानक यमपूरी से जाते वक्त,सभा में से उठकर धर्मराय भागा,तब वहाँ के लोग कहने लगे,अहो धर्मराय, तुम्हे ऐसा भय किससे उत्पन्न हुआ,तब धर्मराय बोला,एक जनक राजा की सत्यवती नामकी राणी विमान में बैठकर जा रही हैं। उसकी अचानक यहाँ स्वारी आई,उसने आज सुर्योदयसे लेकर सुर्यास्त तक,संसार के जितने जीव मरे,उन सबको अपने साथ ले चली हैं,इसलिए मुझे डर लगता हैं ।। ५२ ।।

अर्जुन के मन भया अन्देशा ।। मोर ध्वज सतवादी ।।
सुत कूं बध सिंह कू दिया ।। सत वृत धर्म अनादि ।। ५३ ।।

अर्जुन के मन में संशय आया की,मेंरे जैसा भक्त कोई भी नही,तब कृष्णने अर्जुन को शिष्य किया और आप गुरू बनके एक शेर को अपने साथ लिया और मयूरध्वज राजा के घर गए और मयुरध्वज राजा को बोले,यह शेर मेंरे शिष्य के बदले,तेरा पुत्र,तु और तेरी राणी करवतसे काटकर इस शेर को दे। याने यह शेर मेंरे शिष्य को छोडेगा। मयुरध्वज यह पूर्वजन्म में मोरपंछी था। मयुरध्वज के ससुर को आठ कन्या थी। उन कन्याओंको उनके पिता ने पुछा,तुम किसके कर्म के भरोसेपर हो,तब उसमें से एक पुत्री छोडके,बाकी सब ने कहा,हम बापकर्मी हैं और बापके कर्मो के भरोसेपर हम हैं। हमारा बाप ही हमारा अच्छा करेगा और उसमें से एक पुत्री ने कहा,मैं बापकर्मी न होते आपकर्मी हुँ। मैं अपने पतीव्रत के बलपर कुछ भी कर लूँगी। मैं ने बाप के भरोसे पर कुछ जन्म लीया नही। तब उस लड़की के बाप ने बाकी सब लडकीओं के,अच्छे-अच्छे राजाओंसे शादी करा दी और उन लडकीयों के दहेज में अनंत द्रव्य भी दिया और इस आपकर्मी लड़कीकों एक जंगल ले जाके,मोर पंछीसे शादी करा दी और उसे दहेज के नाम पर उसके शरीर के कपडों के सिवाय कुछ भी दिया नही। आगे यही मोर उसके पतीव्रत के कारण,मयूरध्वज राजा बन गया। कृष्णने अर्जुन से कहा,मयूरध्वज सतवादी है,यह बात अर्जुन को पटी नही,उस मयूरध्वजने अपने एकलौते पुत्रका वध करके, शेरको खाने के लिए दिया। यह सतव्रतका धर्म आनादी हैं ।। ५३ ।।

पाण्डव पाँच द्रोपदी रानी ।। ऊग्रसेन से राजा ।।
कुम्भी पाक कियो सब खाली ।। अे भुरकी राजा ।। ५४ ।।

पाँच पांडव और द्रोपदी राणी और उग्रसेन जैसा राजा(कृष्ण के माता का पिता)इसने और युधिष्ठरने कुंभीपाक नर्ककुंड सब खाली किया,ऐसा इस भुरकी का काम हैं। उस कुंभीपाक नर्ककुंड में दूर्योधनको उसके कुकर्म के कारण डाला था। ।। ५४ ।।

भुरकी तजी भूप दूर्योधन ।। ब्राम्हण पंडित बरणी ।।
नृप तज कृष्ण विदुर घर जीम्याँ ।। यो भुरकी वशी करणी ।। ५५ ।।

इस दूर्योधन राजाने इस रामनाम के भुरकी का स्वागत किया। ब्राम्हण और पंडीतो ने वर्णन किया है। उस दूर्योधन को नर्ककुंड में छत्तीस वर्ष पहले डाला था,महाभारत के छत्तीस वर्ष बादमें युधिष्ठीर स्वर्ग में जाने लगा,तब यमलोक में उसके चारो भाई और द्रोपदी नर्ककुंड में और यमलोग में रोते हुए,उनका रोना उस युधिष्ठर को सुनाई दिया,तब युधिष्ठीर बोला,मैं मेंरे पडदादा के सब वंश को लेकर स्वर्ग में जाऊँगा,उनको सबको निकालूँगा,नर्कसे निकालनेवाला कोई तुम्हारे वंश का आया हैं। तब दूर्योधन ने कहा,मेंरे वंश मैं कोई रहा नही,फिर मुझे नरक कुंड से निकालनेवाला ऐसा कौन हैं। तब उसे कहा,कि,युधिष्ठीर राजा तुझे नरकसे निकालकर स्वर्क में ले जा रहा है। तब दूर्योधन बोला ,युधिष्ठीर यह मेंरा भाई है,तो भाईबंद के उपकार मेंरेपर करके,मैं नरककुंड से निकलूँगा नही,वह भाईबंद मुझे नर्कसे निकाल लेगा,तो वह कब ना कब मुझे टोकेगा ही। इसलिए मैं युधिष्ठीरके निकालनेसे,नर्ककुंडसे निकलनेसे,इस नरककूंड से निकलूँगा नही। तब युधिष्ठीरने सोचा,यह दृष्ट यदी नरककुंड से नही निकला,तो मेंरा सबको ले जाने का व्रत खंडण होगा और यह तो भाई के लिए नर्क छोडकर मेंरे साथ चलता नही और इसे नर्कसे निकाले बिना,सब को ले जाने का मेंरा ब्रिद रहेगा नही। इसलिए युधिष्ठीर राजाने उस नरककुंड के पास जाकर,दुर्योधन राजा को पुकारा(बुलाया)और बोला,दूर्योधन भाई,मैं स्वर्ग में जा रहा हुँ,तो स्वर्ग जाते समय बड़े भाई का दर्शन लेना,इसलिए तुम्हारे दर्शन के लिए आया हुँ,तो छोटे भाई पर(मुझ पर)कृपा करके,कुंडके बाहर आकर मुझे दर्शन देना, याने मैं तुम्हारा दर्शन लेकर स्वर्ग जाऊँगा। तब दूर्योधन नर्ककुंडके बाहर आया और उसकी दृष्टी युधिष्ठीरपर पडते ही,उसका मन निर्मल हो गया। फिर युधिष्ठीर बोला,तुम मेंरे पहले जन्में मेंरे बडे भैय्या हो,तो बडे भाई को छोडकर,मुझे स्वर्ग में जाना अच्छा नही लगता। हम सब तुमसे छोटे तुम्हारे आज्ञाकारी अंकीत हैं। तो स्वर्ग में भी बडे भाई के बिना हम छोटोको अच्छा नही लगेगा,इसलिए आप भी हमारे साथ चलो,यह भुरकी ऐसी वंशमें करनेवाली हैं। कृष्ण शिष्टाई करने के लिए दूर्योधन के यहा गया था,तब श्रीकृष्ण ने दूर्योधन राजाके घर का पक्वान्न छोडके,विदूर के यहा जाकर शाक आहार किया। तो ऐसी यह भुरकी वशमें करनेवाली हैं। इस विदूर के पास भुरकी थी,उस योगसे श्रीकृष्ण विदूर के वश हो गया ।। ५५ ।।

जेमलराव मुरारी मीरा ।। जक्तसिंह बड भागी ।।

रांका बांका कालु कुवा || भक्त पुरातम जागी || ५६ ||

और भी यह भुरकी जेमेलराय मुरारी और मिरा और जगतसिंग इतने पास थी,ये भी भाग्यवान हुए। एक समय जेमेलराय पुजा में बैठा था,उसी समय मंडोवरका राजा इससे युध्द करने के लिए आया। यह जेमेलराय पुजा में बैठता तो, सव्वा प्रहर नही उठता था,यह मंडोवरको मालुम था। इसलिए ऐसा मोका देखकर,उसके पुजा के समय छापा डाला और मेंडता शहर की लूट कर ली। तब यह इष्टदेव की मुर्ति चर्तूभुज युध्द करने के लिए गई और युध्द करके मंडोवर के राव को भगा दिया। जेमलरावकी पुजा समाप्त होने के बाद लढाई के लिए घोडा लाने को कहा,तब घोडा और उसका पोषाख सब धुलसे भरे हुए दिखे और उसका जय हुआ,यह खबर आयी। लेकिन पत्थर की मुर्तिने जाकर ऐसा युध्द किया,यह बात भाषांतर कर्त्या को कबुल नही होती। ऐसे ही मिराँबाई के भी बहुत चमत्कार हैं,वे यहा लिखनेसे बहुत विस्तार बढेगा,वे मिराँबाई के पर्ची में देख लेना। इसके सिवाय राका–बाका ये जात के कुंभार थे। एक समय राका बाका की बेटी और नामदेवकी बेटी,भिमा नदीपर स्नान करने और कपडे धोने और पानी लानेके लिए गई थी। उस समय राका कुम्हार की बेटी और नामदेव की बेटी इन दोनो में आपस में विवाद हुआ। उस समय राकाकी बेटी नामदेवकी बेटीसे बोली,तेरा बाप तो मुंडफोडा फकीर,जैसा मूंडी(सिर फोडके)देवको मांगनेवाला,देवपर कुछ ना कुछ कोड डालनेवाला सकाम भक्त हैं और मेंरा बाप निष्काम भक्त हैं। मेंरे बाप के पास खाने को कुछ भी नही हुआ,तो भी भगवान कुछ मांगता नही। यह बात नामदेव की बेटी ने,नामदेव को जाकर बतायी,तब नामदेवने मंदिर में जाके विठोबा को कही,की यह राका भक्ती करता,इसके भक्ती के बदले इसे कुछ दे,फिर नामदेव और देव ये जंगल में जाकर,जिस जगह राका–बाका लकडी काट रहे थे,वहाँ उन्होंने(नामदेव ने और विठोबाने)लकडीयाँ काट रखी,ये राका–बाका वहा लकडी काटने गये, वहा पहले ही काटी लकडीयाँ देखकर,वहा तो यह लकडी किसी दूसरे ने काटकर रखी हैं,ऐसा बोलके,लकडी लाने के लिए दूर चले गये,इसलिए उनको उस दिन घर लौटने में देर हो गई। विठोबा नामदेव से बोले,तू राका–बाका को देने को कहता,लेकिन यह लेता नही,तब नामदेव बोला,तुमने इनको क्या दिया और क्या ये लेते नही,तब नामदेव ने कहा,तुमने लकडी काट के रखी,तो लकडी को ये क्या लेंगे। कुछ मौल्यवान वस्तु दी होती,तो वह लेने बिना नही रहता, तब देव ने एक सोने का कंगन राका–बाका के आने के रास्तेपर डाल दिया और नामदेव और विठोबा पेड के आड देखने खडे रहे। उधर से राका–बाका लकडी की मोली लेकर आए। आगे राका चलता था और पिछे बाका ही रहती। राका को वह कंगण दिखा,उसने मन में सोचा, बाका आ रही हैं,उसका मन डगमगाके यह कंगण उठा लेगी,इसलिए उसने उस कंगण पर पैरसे मिट्टी डाली और कंगण दिखेगा नही,ऐसा करके आगे चलने लगा,उतने में बाका आकर पहुँची

और वह कंगण बाकाने अंगुठे में पकडके,पिछे से ऐसा फेका की,वह राका के आगे आ पडा। तब राका पिछे देखने लगा,तब बाका बोली,तुम इसको सोना और द्रव्य समझे, इसलिए इसके उपर मिट्टी डाली,लेकिन मैं तो इसको मिट्टी जैसा ही समझती हुँ। तब राका ने कहा,तु मेंरे से भी जादा हैं। विठोबा ने यह बात देखकर आश्चर्य किया और कालु नामका कुम्हार यह भक्त था,परंतु उसके घर में दारीद्र था और आने जानेवाले संतोका वह सन्मान करता था। संत आए तो,गाँव में एक बनिया था,उसके यहासे खाने के लिए लाता था और उसके बदले उसे मिट्टी का बर्तन देता था। वह बर्तन बनाते समय उस बनिये को पुछता था,क्या बनाके दूँ। एक बार उसके घर संत आए,तब बनिये से कहा,तुम कहोगे वह मैं बना के दूँगा,लेकिन मुझे सामान दो। उस बनियेने उसे दो,तीन बार कहा,मैं बताऊँगा वह कर देना चाहिए। वैसे ही कालु ने भी तीन बार कहा,तुम बताओंगे वह मैं कर दूँगा। कालु जानता था कि,मेंरे पाससे बर्तन बना लेगा,जादह से तो रांजण,नांद वगैरे ऐसे बडे बर्तन करने को कहेगा। ऐसा समझके उसने कबुल किया और सामान लेकर संतोंको भोजन करवाया। दूसरे दिन बनिये को पुछने गया और क्या बना दूँ,बनिया बोला,मैं कहुँगा वह देनेका तुने कबुल किया हैं,उस करार के नुसार ऐसा कर की,मुझे कुँआ खोद दे। तब कालु डरा और बोला,मुझे सामान के बदले कुँआ खोदने को बोलता,यह कितना अन्याय हैं। बनिया ने कहा,तु तेरे वचन के नुसार काम कर,नही तो तेरा वचन झूठा कर। मेंरे कहने के अनुसार करने का तुने कबुल किया था,कि नही। तब कालु ने कहा,कबुल तो किया था,तब बनिया बोला,मुझे कुँआ खोद दे,फिर वह कुँआ खोदने लगा। कुँआ खोदते-खोदते कुँआ निचे गया और कुँआ अचानक ढल गया और कालु बिच में दब गया और कालु की कमर टुटकर कुबडी हो गई। कुँआ खिचककर कालु बिच में दबा,यह बात बनियेने सुनते ही,वह अपना बाड-बिस्तर जमा करके,वह बनिया भाग गया और मन में उसने समझा,कि मैंने इसे थोडासा सामान देके कुँआ खोदनेको कहा,यह ऐसी अन्याय की बात सरकार को मालूम होगी,तब इस अन्याय के बदले मुझे भारी दंड होगा। इसलिए वह दूसरे राज्य में भाग गया। यहा ऐसा हुआ,कि कालु अंदर दब गया,परंतु मरा नही,अंदर भजन करने लगा। तिसरे दिन उस कालु कुम्हार के लिए,लक्ष्मी सोने की थाली में खाना लेकर आने लगी। वह लक्ष्मी हर रोज सोने की थाली में भोजन ला के देती थी। वह खाना वह खाता था और अंदर भजन करता था। एक समय उस कुँवे के पास बैरागी लोगोकी जमात आकर उतरी। वे बैरागी संध्या समय आरती बोलके जय कहते थे,वह जय शब्द सुनके बैरागी बोले,यह जय शब्द कहासे आता,इसलिए उन्होने कान देके निरखके देखा,तो उस जगह से राम नामकी ध्वनी सुनाई देने लगी। तब उन्होने सुबह ही गाँव से कुदल,फावडा वगैरे सामान लाके खोदने को लगे।जैसे-जैसे खोदते गए,वैसे-वैसे राम नामकी ध्वनी जादा आने लगी। खोदते-खोदते नीचे,कालु

कुम्हार का कमर टुटके कुबडा बना हुआ,अंदर में खुली(पोकळ)जगह में दिखा,तब उसे बाहर निकाला। बाहर निकालते समय कुम्हारने लक्ष्मीने दिये हुए,सोने के तीस पात्र लेकर बाहर आया। यह कुबडा हुआ,इसलिए इसे कालु कुवा बोलने लगे। उसका स्थान मारवाड झितडा गाँव में है। उसकी भी यह भुरकी के योगसे पुरातन भक्ती जागृत हुई ।। ५६ ।।

कृष्णदास पयहारी गलते ।। मान राज बड़ भुपा ।।
अलख छोड़ लख भुरकी लिनी ।। दर्शन तज भज श्रूपा ।। ५७ ।।

कृष्णदास पय आहारी(दूध आहारी),यह गलता(जयपूरसे चार मैल है,वहा)हुआ। वहाँ पहले नाथों को स्थान था,वहा नाथ लोग रहते ये,उन नाथोके सब नाथोका गुरू(नाथ)सिध्द था। उस नाथको वीर विद्या सबही आती थी। वहा उस नाथके आसान के पास कृष्णदासजीने संध्या समय मुक्काम किया और वहा धुनी लगाके बैठ गया। वहा वह नाथ आकर कृष्णदासजी को बोला,तु यहा मत रूक। उसने उससे शिकायत की तब कृष्णदासजी ने कहा,अरे,मैं तुझे कुछ खानेके लिए नही मांगता। तेरे स्थान में मैं कुछ आता नही। मैं तुझे पीने के लिए पानी भी नही मांगता। मैं यहा रातभर रहके सुबह चला जाऊँगा। तो भी वह नाथ बोला,तू यहाँ रूक ही मत। यहासे चला जा। तब कृष्णदासजीने अपने पासके कपडेकी वहा उन्होने(कृष्णदासजीने) धुनी लगाई थी। उस के निखारे भरके,पास के ही पहाड पर जाके धूनी लगाके बैठ गए। बाद में यह नाथ सिध्द था। वह अपनी सिध्दाईसे शेर का रूप धारण करके,फिरसे कृष्णदास के पास जाकर,उनको डराने लगा,तब कृष्णदासजी ने कहा,तु यहा आकर क्या करता,कचरेपर जाकर वहा घूम और वहाँ गधा होके चर,तब उस नाथ का गधा हो गया। वहाँके जयपुरके मानसिंह राजाका यह नाथ गुरू था। वह राजा गुरूके दर्शन के लिए वहा गया,आसनपर गुरू नही और सब नाथोंके कानमें मुद्रा नही,यह देखकर उस नाथके दूसरे शिष्यको मानसिंक राजाने पुछा,कि गुरूजी कहा है,तब उनके शिष्योंने कहा,रात से वे सामनेके पहाडपर बैठे हुए साधु के पास गये है,वहाँ से अभी आए नही,फिर राजा उस गलते के पहाड पर जाके कृष्णदासजी से पुछने लगा,मेंरे गुरू बताओ तब कृष्णदासजी ने कहा,उस कचरेपर देख,तो वह गधा राजाके शरीरपर चलकर आया,तब राजाने उस गधेके कान फटे हुए देखकर,उसे पहचान लिया और समझ गया,यह मेंरे गुरू हैं,उस गधे के कान फटे हुए थे,परंतु उसमें मुद्रा नही थी,मुद्रा के बिना दर्शन नही करते थे। वे मुद्राको ही दर्शन कहते हैं,इसलिए मानसिंह राजा उस गधेको लेकर कृष्णदासजीके पास आया और बोला,इसकी मुद्रा कहा हैं,तब कृष्णदासजीने कहा,मुद्रा मेंरे पैरो के निचे मेंरे खेटर में हैं,तब जोडो में से मुद्रा निकाली और राजा को दी। तब उस मुद्राका राजाने दर्शन किया और राजा बोला,इसे फिरसे नाथ(मनुष्य)बना लो,तब कृष्णदासजीने कहा,इन नाथ लोगोंका स्थान है,वह मेंरे हवाले करो। वहाँके सब नाथोंको दूसरी ओर रहने को जगह दो और इन नाथ

लोगोंने एक-एक लकडी की गठरी,हर रोज मेंरे यहा लाकर डालनी चाहिए। इनके स्थान में मैं मेंरा आसन करके,मैं और मेंरे पिछेसे बननेवाले मेंरे शिष्य बनकर,यहाँ दर्शनको आना चाहिए। इसप्रकार राजासे करार कर लिया और उस स्थान का ताबा लिया और उस नाथको फिरसे मनुष्य बना दिया और वह गलत्याका स्थान अभी भी वहाँ कायम हैं,वहाँ के नाथ अभी भी आज तक वहा लकडी की गठरी लाकर डालते हैं। बाद में उन्नीसवी शताब्दी में जोधपूर का राजा मानसिंह यह नाथका बहुत भक्त होने के कारण,नाथ वहा गठरी डालते,यह बात सुनकर उसे बहुत बुरा लगा। इसलिए जोधपुर के मानसिंह राजाने जयपुर के राजा को,यह बात(गठरी डालने की)बंद करने के लिए लिखा। वह जयपूर के राजाने जोधपूर के राजा को लिखा की,इन सब नाथ लोगोंको तुम तुम्हारे जोधपूर में ले जावो। यहा रहे,तो उनको गठरी डालनी ही पडेगी। फिर जोधपूर के मानसिंह राजाने यहाँके आमेरके सभी नाथोंको जोधपूर लाने के लिए आदमी भेजे,वे नाथ जोधपूर आते समय रास्ते में पटापट मरने लगे। हररोजके इतने नाथ मर रहे थे की,इस हिसाबसे जोधपूर पहुँचने के पहले सब नाथ मरके,फिर उन नाथों ने ही कहा,हम जोधपूर में आयेंगे नही,यदी हम जोधपूर की तरफ चलेंगे,तो जोधपूर हम एक भी पहुँचेगें नही। हमें वापस जाने दो,गठरी लाना हमें मंजूर हैं। ऐसा कहके वे फिर गलत्या में गए। वे आज भी वहा लकडीकी गठरी लाकर डालते है,इसतरहसे जोधपूर के मानसिंह राजाने,अलख शब्द को छोडकर लखकर भुरकी ली। उस दर्शन योगीके कानकी मुद्राका दर्शन छोडकर,इस स्वरूपका भजन किया ।। ५७ ।।

षट शास्त्र ऋषियां भाख्या ।। ब्रम्हा चारू वेदा ।।
अवतार तिथंकर पीर पैगम्बर ।। सब भुरकी रा भेदा ।। ५८ ।।

इन छः ऋषियोंने(जैमीनी,कणाद,गौतम,पातंजली,व्यास,कपील इन्होने)छः शास्त्र बनाए और ब्रम्हाने चार वेद किए और अवतार,पीर,पैगंबर,तीर्थंकर इन सभी ने,इस भुरकी का भेद लीया ।। ५८ ।।

जन दरियाव संत जुग तारण ।। कलजुग हरि अवतारा ।।
भुरकी तत्व खोजना किनो ।। आगम निगम विहारा ।। ५९ ।।

दरीया साहब ये संत जगत को तारनेवाले,इन्होने कलीयुग में अवतार लिया। इन्होने भुरकी के तत्वोंकी खोज की। उन्होने अगम-निगम का विचार किया ।। ५९ ।।

खोजी परसा अगर किलजी ।। जन नानग लाहोरं ।।
हरिदास को गोरख दिनी ।। यू भूरकी सब ठोरं ।। ६० ।।

और भी खोजीजी(राणाबाई के गुरू),परशरामजी,अगरदासजी,कीलजी और संत नानक साहेब ये लाहोर(पंजाब प्रांत)में हुए और हरीदास निरंजनी हुए,इनको गोरक्षनाथने भुरकी दी,इस तरह यह भुरकी सब जगह है।(ये हरीदासजी जात के राजपूत थे),वे पहले

लुटमार का धंदा करते थे। वे मनुष्यको जीवसे मार के सब कुछ लेते थे और उस मरे हुए प्रेतको,कुँअे में डाल देते थे,इस तरह का उनका धंदा था। वे साधु होनेपर उस कुँअे के पाससे जाते समय,बराबर के लोगों से कहा,

|| दोहा ||

|| हरीदास इण कुंपमें || केता डाऱ्या मार ||
|| के आगला बदला किया || केकर दिया उधार ||

उन्होंने कहा की,इस कुँए में मैंने अनेंको को मार-मार के डाला। एक तो एक जीव से मेंरा बदला था,वह मैंने ले लिया,नही तो उधार इनसे बदला करके बांध लिया। इस तरहसे बहुत दिनो तक लुटमार कर रहे थे,आगे एक दिन उनको गोरक्षनाथ मिले,तब उन्होंने इसे उपदेश किया,तू इतने कर्म करता,उसका पाप तेरे माथेपर चढता,वह तुझे भोगना पडेगा,तब हरीदास जी बोले,यह मेंरा पाप कैसे मिटेगा,तब गोरक्षनाथने कहा,एक जगह आसन मारके राम नामका जप कर,तब हरीदासने कहा,मेंरा पाप गया इसका सबूत क्या? मैं कैसे समझू,की मेंरा पाप गया,तब गोरक्षनाथ बोले,तु कोयला लाकर के तेल में उगाल और उस कोयले के उगाले हुए तेल में तेरे ये शरीर के सब कपडे भिगो दे और कोयला उगाल के बनाए हुए तेल में भिगे हुए कपडे पहन ले और भजन करने बैठ जा,भजन करते-करते तेरे कोयले से तेल में उगाले हुए कपडे,सफेद स्वच्छ हो जाएँगे,तब तू समझ ले की मेंरा पाप गया। फिर हरीदासजी ने कहा,मैं कोयले से कपडे काले करके भजन करूँगा,लुहार हँसके बोला,बडा आया भजन करनेवाला। आदमीओं को मारना और लुटना छोड,मैं तुझे कोयले नही देता,उधर चला जा,लुहारने कोयला नही दिया था। दूसरी जगहसे कोयले और तेल ला के,मारवाड देशके डिडवाण्या के पासके पहाडपर भजन करने निकल गया,खाना-पिना सब छोड दिया। एक सरीखा रात-दिन भजन करने लगा। उसे भजन करते किसी ने देखा,उसने गाँव में आकर सब हकीकत बतायी,की,जो हरीदास लुटमार करता था,वह एक जगह बैठकर भजन कर रहा हैं। आज तीन दिन हुए,कुछ खाना पिना नही,तब गाँवके लोगोंने अच्छा-अच्छा उत्तम प्रकारका पक्वान्न करके,इधर-उधर से लेकर आए,वह देखकर हरीदासजीने दोहा कहा।

|| दोहा ||

|| हरी दासका शीस पर || अेसा हे भगवान ||

हरीदासजीने कहा,मैं तीन दिन पहले कोयला माँगने के लिए गया था,तो मुझे किसीने कोयले नही दिए और लोगोंने अपने दरवाजे बंद कर लिए और एक दूसरे से कहने लगे की,अपने दरवाजे बंद करो,यह हरीसिंह गाँव में आया है,वह लागोंको मारेगा और लुट लेगा। एक लुहार का दुकान चालु था,उसे मैंने कोयले मांगे,तो उसने कोयले भी मुझे दिये नही और अब मैं राम भजन करने बैठा,तो इस राम भजन के प्रतापसे किसी से न मांगते,न पुछते,जिधर-उधर से पक्वान आ गए। तो ऐसे ये भगवान मेंरे सिरपर है। ऐसा

कहा,हरीदासजीका जन्म मारवाड देश में कपडोद गाँव में हुआ,वे सांखल राजपूत थे,१४७४ संवत में इनका जन्म हुआ। ये तलवार के बलसे लुटमार करते थे,किसीकी शंका नही करते। इनके लुटमार से राजाने भी इनपर रोष (राग)किया। एक दिन गोरक्षनाथ अचानक मिले,उस गोरक्षनाथने उनको राम नामका उपदेश दिया। जप करते-करते भजनके बलसे ब्रम्ह पहचाना,इसपर:-ये हरीदासजी खुद्द कहते,मेंरा गुरू गोरक्षनाथ हैं और इनके अनुयायी निरंजनी मत के हैं। साधु और गृहस्थी ये भी कहते की, हरीदासजी के गुरू गोरखनाथ हैं। लेकिन गोरखनाथ के कान में मुद्रा है,गोरखनाथ के पास शैली और बजाने की शिंगी हैं और खुद्द गोरक्षनाथ राम नामका जप नही करते,अलख इस शब्दका जप करते थे। फिर इस हरीदासजी के पास शैली और शिंगी कुछ नही,अलख इस शब्दको स्मरण न करते हुए,राम नामका स्मरण करते थे,इसपर से ये गोरक्षनाथ के शिष्य न होते,दादुजी के या दूसरे अधिक किसीके शिष्य थे। गोरक्षनाथके शिष्य होते तो,उनके काम में मुद्रा क्यों नही और इनके पास शैली और शिंगी क्यों नही और अलख शब्दका स्मरण क्यों नही,यह गुरूका इनपर वेष(बाणा)न होने के कारण,ये गोरक्षनाथके शिष्य नही माने जाते,इस तरह से यह भुरकी सब जग हैं।। ६० ।।

बलख बुखारंदा सुलतानी ।। चेरी चाटक सिधा ।।
तजिया राज भज्यो साहिब कु ।। यो घर में बाजीन्दा ।। ६१ ।।

इस तरहसे बलखा बुखारका सुलतान इसे एक बार उसकी बांदीने,इसके सोने के लिए फूलोंकी सेज तैयार की और उस बांदीने सोचा की,इन फूलों में सोना बहुत सुखावह होता होगा,तो इन फूलों में बनाई हुई सेजपर सोई और उसे निंद लग गई। वह बादशहा आने तक उठी नही। यहा सुलतान बादशहा आकर देखता,तो पलंगपर फूलोंके सेजपर बांदीको सोया हुआ देखकर, उसके हाथ में हुए चाबुकसे बांदीको तीन चाबुक जोरसे मारे। वे चाबुक लगते ही बांदी जोर-जोरसे हँसने लगी,तब सुलतान ने कहा,रंडी रोने के समय हँसी कैसे,तब बांदी बोली,मै एक थोडा समय इस पलंगपर सोई,तब उतने समय में मुझे तीन चाबुक बैठे और तुम हमेंशा इस पलंगपर सोते हो। इसका आप पर कितना मार पडेगा,इस बात की मुझे हँसी आयी। इतना सुनतेही बादशहा वहा न सोते हुए,सब राज्य वैभव इत्यादी छोडकर चल पडा। इसकी पूरी कथा बोध सागर ग्रंथ में सुलतान बोध नामक भाग में है। वह बोध सागर ग्रंथ ग्यारवा तरंग देखना। इसतरह से सुलतानने राज्य वैभव सब छोडके,साहेबका भजन किया। ऐसे बाजिंदजी ये पठाण थे,आमेंर के राजाके पाँच सो घुडस्वारो के सरदार थे,एक समय रास्ते से जाते हुए, इनका रालीता लदा हुआ एक ऊँट मर गया। तब लोग उस मरे हुए ऊँट से बोझा उठाने लगे और दूसर ऊँट पर रखने लगे,तब बाजिंदजी घोडेपर बैठे हुए,वहा आ पहुँचे और ऊँट के उरप से रालीता उतारनेवाले लोगोसे कहा,अरे,ये क्या करते हो,इसके उपरका सामान क्यों उतारते ,तब

लोग बोले,यह ऊँट मर गया,इसलिए इसके उपरका रालीता हम उतार रहे है,तब बांजिदजी ने कहा,अरे,इसका क्या मरा,इसके सब इंद्रिय जगह के जगहपर है। आँखो की जगह आँखे,कान की जगह कान,मुँह,नाक इ.सबही इसको हैं ,तो फिर इसका मरा क्या?तब लोगोंने कहा,इसका आखरी दिन आ गया,इसलिए इसका जीव निकल गया। तब बाजिंदजी ने कहा, इसका जैसा जीव निकल गया,वैसे हमारा भी निकलेगा क्या?तब लोगो ने कहा,हा,तुम्हारा-हमारा सभीका ऐसा ही जीव निकलेगा और हम सब मीठ्ठी में मिल जायेंगे। फिर हमारे सब माल का दूसराही मालक होगा क्या?जैसा इस ऊँटपरका सामान दुसरे ऊँटपर रखा,ऐसा ही हमारा होगा क्या?लोगोने हा,ऐसा कहनेपर उसी समय,वहाँसे निकल गए और मरे हुए ऊँटसे ज्ञान प्राप्त कर,सभीका त्याग करके,भजन करने लगा ।। ६१ ।।

सेऊ समन नीका भुरकी ।। बगतु मात फरिन्दा ।।
नूरा मात पुत्र हेतम सा ।। सांई शीश सरिन्दा ।। ६२ ।।

ऐसे ही सेऊ समन यह भुरकी के योगसे,संतोके लिए सिर देकर अन्न लाया,यह सेऊ समन की पर्ची रत्न संग्रह में पान १२१ में छपी हैं,वह देखना। शेख फरूंद की माँ बुगती थी,उसने अपने शेख फरींद पुत्रपर भुरकी डाली और हातीम बादशहापर उसकी माँ नुरा ने हातीमपर भुरकी डालके,भक्ती करना और परोपकार करना,यह समझा दिया। हातीम की माँ नुराने,हातीम का सिर मांगने आए हुए फकीर को,मस्तक देने के लिए,हातीम बादशहाको फकीर के साथ रवाना किया।। ६२ ।।

त्रिलोकचन्द घर रह्यो बरतियो ।। नामें नाम नवेऱ्यो ।।
छान छवाई गऊ जीवाई ।। मंदिर को मुख फेऱ्यो ।। ६३ ।।

तीलोकचंद बनिया के घर भगवान आकर,नोकर बनकर रहे। यह कथा तीलोकचंदजी के पर्ची में है। वैसे ही नामदेव से इस नामका निखारा किया। इस नामदेव के घरपर देवने छप्पर किया। एक बार नामदेव को घर को दूष्ट लोगोंने आग लगा दी,उस समय नामदेव और उनकी स्त्री, लड़की और माँ घर में सोए थे। तो भी वे जले नही,दूष्ट लोगोने नामदेव घर को आग लगा दी, परंतु सज्जन लोग घर की वस्तु बचाने कि लिए बाहर लाते थे,लेकिन नामदेव वह बाहर निकाली वस्तु फिरसे आगमें डालता था। लोग वस्तु आगसे निकालते थे,वही वस्तु नामदेव फिरसे आग में डालता था। सामान निकालनेवाले लागे थक गए। नामदेवने सब वस्तु फिरसे आग में डालकर जला दी। इस तरहसे नामदेव सब चिजे जलाकर बिन घरका और बिना सामान का हो गया। फिर इन तीनों में धुपकाल कैसे ही,दिवार की छाया में रहकर निकाला। परंतु आगे जब वर्षा ऋतु आई,तब पानी में भिगने लगे,तब नामदेव की माताने बड-बड करके,नामदेवको जंगलमें लकडी,घास लानेके लिए, कुछ छाव हो जाएगी,इस कारण भेजा। नामदेव कुल्हाडी लेकर लकडी लाने के लिए जंगल

में गया। नामदेवने जंगल में जाते ही,एक रूईके पेडपर कुल्हाडी मारी,उस रूई के पेड से दुध निकलने लगा,यह देखकर नामदेव ने विचार किया,इस पेडको कुल्हाडी मारने से इसे दु:ख हुआ होगा। इससे दु:ख कैसे होता होगा,इसका अनुभव लेने के लिए,एक कुल्हाडी का घाव अपने पैर पर मारा। कुल्हाडी का घार मारते ही,खून बहने लगा और दु:ख होने लगा और बोलने लगा,मेंरा लाल खून है और इसका खून सफेद है। जैसा मुझे दु:ख हुआ, वैसा ही इस पेड को भी हुआ होगा,ऐसा कहकर नामदेव ने अपने पगडी के दो टुकडे करके,पगडी का एक टुकडा उस पेड को बांधा और पगडी का एक टुकडा अपने पैर को बांधा। कुल्हाडी फेककर कुल्हाडी का डंडा अपने घर लेकर आया। बारीष की झडी में सब भिगने लगे,दुर्जन लोग हसने लगे। इस कारण भगवान को बडा प्रश्न पडा?इसलिए भगवान ने छप्पर लगाने के लिए लगनेवाली लकड़ी,घास,तिवण और चिरे लेकर आया और नामदेव का छप्पर बनाने लगा। लेकिन वह बांधके ओढने का काम एकसे नही होता था,इसलिए दूसरे के मदत लगी,तब भगवान ने नामदेव को बुलाकर कहा,यह चिरे खिचने लग,नामदेव बोला–मैं तेरे बाप का नौकर हुँ क्या?तुझे लगे तो बांध नही,तो चला जा। फिर भगवान रूक्मिणीको बुलाकर वह चिरे खिचने लगा। भगवान ने और रूक्मिणी ने छप्पर लगाके तैयार कर दिया। एक समय नामदेव तीर्थयात्रा को दिल्ली गया,तब दिल्ली के बादशहाने उसके सामने गाय को मार डाला और कहा,एक तो इस गाय को जींदा कर,नही तो मुसलमान बन जा। यदी गाय को जिंदा नही करेगा और मुसलमान नही बनेगा,तो तेरा सिर उडा देंगे,तब नामदेवने वह गाय जिंदा कर दी और बादशहाके महलमें अग्नी लगा कर पर्चा दिया,(चमत्कार बताया),एक बार नामदेव घुमते–घुमते नागनाथ के आवंढ्या को आया,उस नागनाथ के मंदिर में दूसरे हरीदासका किर्तन चल रहा था,वहाँ नामदेव भी किर्तन सुनने गए,नामदेव के पाव में जुता था,नामदेवने सोचा,जुता बाहर रखकर किर्तन में जाऊँ तो,जोडा कोई भी ले जाएगा,फिर मेंरे पाव में काटे चुबेगें। इसलिए नामदेवने जुता अपनी पगडी में लिपट कर,पगडी में जुता है,ऐसा किसी को न दिखे, इसलिए बगल में लिया और मंदिर में जाकर किर्तन में शामील हुआ। मंदिर में किर्तन करने वाले खडे थे। उस में नामदेव भी जाकर खडा हुआ। किर्तन करनेवाले सभी के हाथों में टाल थे,वे टाल बजाकर आनंद से किर्तन कर रहे थे। परंतु नामदेव के हाथ में टाल नही थे। इसलिए उसने बगल में से पगडी निकालकर,उसमें का लपेटा हुआ जुता बाहर निकाला और दोनो हाथ में जुते लेकर,टाल जैसा फडा–फड बजाने लगा। तब लोगोने उसे,मंदिर में जुते लाए है और तालसे बजा रहा है,यह देखकर नामदेव को मंदिर के सामने भी बैठने नही दिया। तब नामदेव मंदिर के पिछे जाकर बैठा और रोने लगा और करूणा(प्रार्थना) करने लगा की,मुझे मंदिर के सामने भी नही बैठने दिया,तब नागनाथ का मंदिर घुमके नामदेव के सामने हो गया। मंदिर के लोगोने नामदेव को फिरसे मंदिर के

सामने देखकर,नामदेव को मारने के लिए गए,तब नामदेव ने कहा,तुमने मुझे मंदिरसे निकालकर इस पेड के निचे बिठाया था,उसी पेडके ही निचे में अब तक बैठा हुँ,वह देख लो। फिर लोगोंने देखा,तो नामदेव मंदिर के सामने नही आया,मंदिर ही नामदेव के सामने हो गया। ऐसा उनको दिखा और मंदिर का दरवाजा,जो पूर्व को था,वह पश्चिम से हो गया। वह आज तक पश्चिम कों ही हैं। महादेव की पिंड सब उत्तर की तरफ पानी बहनेवाली होती है,परंतु आवंढ्या की नागनाथ की पिंड,मंदिर के घुमने से दक्षिण को उलटी हो गई,वह अब तक दक्षिण को ही है ।। ६३ ।।

बांदर भील रीछ निस्तारी ।। नाम धरू किन किन का ।।
पापी अनंत ऊधाऱ्या भुरकी ।। अजा मेंल गज गिनका ।। ६४ ।।

इस तरहसे इस भुरकीसे बंदर,भालु और भिल्लका भी उध्दार(तारण)हुआ। अब मैं किन-किन के नाम बताऊँ?इस भुरकी ने अनंत प्राणीयोंका उध्दार किया। अजामेलका उध्दार किया,वह अजामेल की पर्ची रत्नसंग्रह के पान ११८ में देखना। गजेंद्र का उध्दार किया और गणिका जो वेश्या थी,उसका भी इस राम नामके भुरकी से उध्दार हुआ। इसकी कथा पहले भाग में,पान( )में देखना ।। ६४ ।।

च्यार जुगा में भुरकी चावी ।। धरम ज जाना बिध का ।।
चवदे भक्त माल में चारन ।। अेक अेक सुं इधका ।। ६५ ।।

इन चार युगो में यह भुरकी खुल्ली हैं,अनेक तरह के धर्मो में भी भुरकी है। भक्तमाल ग्रंथ में चौदह हरण(बारठ याने राजपुतों के भाट),ये चौदह भक्तमाल में हैं। वे एक से बढकर एक जादह से जादा हुए ।। ६५ ।।

अनंत क्रोड ब्रम्ह ऋषि उधऱ्या ।। अनंत कोटि सो राजा ।।
प्रजा अनंत कोटि पद पाया ।। बाजे प्रगट बाजा ।। ६६ ।।

इस भुरकीसे पहले अनंत कोटी ब्रम्ह ऋषीओंका उध्दार हुआ और इस भुरकीसे पहले अनंत कोटी प्रजाको वह पद मिला। उसके प्रगट बाजे बज रहे है ।। ६६ ।।

च्यार सम्प्रदा बावन द्वारा ।। सब भुरकी का शरणा ।।
ता सतसंग अनेक जना का ।। मिटगा जामण मरणा ।। ६७ ।।

ये चार संप्रदाय(रामानंद,निमानंद,श्री वैष्णव,माधवाचार्य),ऐसे ये चार संप्रदाय,उनके यह बाव्वन द्वारे,ये सब भुरकीके ही शरणमें आकर हुए और उनके सत्संगके योगसे,अनेक संतोका जन्मना-मरना मिट गया ।। ६७ ।।

नव निनाणुं द्वादश क्रोड ।। सप्त पांच जुग जाणे ।।
गिणती करे कोण इण घर की ।। पहुंता जके पिछाणे ।। ६८ ।।

नौ कोटी जीव चौबीस तिर्थंकरोंने तारे। निन्यानवे कोटी जीव गोरक्षनाथने तारे और बारह सो लक्ष बली राजाने तारे। सात और पाँच कोटी जीव प्रल्हादने तारे और सात कोटी जीव

हरिशचंद्र ने तारे। नौ कोटी जीव युधिष्ठीरने तारे। उन्होंने इतने जीव इस भुरकी के योगसे तारे, इसे जगत जानता है। इस घरकी कोई गिनती कर सकेंगे। जो इस घरको पहुँचे है,वे ही इसे पहचानेंगे ।। ६८ ।।

ररंकार है तारक मंतर ।। भरम्योडा कहे भुरकी ।।
सवा लाख जन में भी तारू ।। सपत सुनो सतगुरू की ।। ६९ ।।

रंरकार यह तारक मंत्र हैं। लेकिन जगत में जो भ्रमित हुए है,वे इस तारक मंत्रको भुरकी कहते। तो सव्वा लक्ष जीवोंको मैं ही तारूँगा,यह सतगुरू की आण सुनो ।। ६९ ।।

सुरज सोम भूप जीग वंशी ।। जमन हगीगत पावै ।।
भुरकी भजी जके जन अमर ।। व्यास भागवत गावे ।। ७० ।।

सुर्यवंशी और चंद्रवंशी ऐसे पहले राजा हो गए और मुसलमानों में(शरीगत,तरीगत,हगीगत, मार्फत)ये चार है। इस भुरकीके योगसे हगीगत मिल गयी। जिसने–जिसने इस भुरकी का भजन किया,वे जन अमर हो गए। ऐसा इस भुरकी को व्यासने भी भागवत में बताया है ।।७०।।

रामानंद आ भुरकी लाया ।। भुरकी कळ नही पाई ।।
दास कबीर प्रगट कीनी ।। सब ले मांय न्हकाई ।। ७१ ।।

यह भुरकी रामानंदने द्रविड देश से लायी थी किंतु रामानंद को इस भुरकी की कला मिली नही। एक समय रामानंद द्रविड देश में गये थे। द्रविड देश में पहले ऐसी रीत थी कि,स्त्री–पुरूषोंका जन्म हुआ और वे मनुष्य थोडे बडे होकर भजन करने लगे,उस मुलख के सभीकी ही हररोज कितना भजन किया इसकी अपनी अपनी हजेरी सब लोग रखते थे। हररोज का सेकंद सेकंद का हिसाब रखते थे और वह मनुष्य मरा याने,उसके पिछेसे उसके हररोज के भजन किये हुए घंटे,मिनट की बेरीज करके,उसका एकंदर वर्ष,घंटे , मिनट जो होंगे उतनी ही उसकी उमर समझते थे व उतनीही आयु शिलालेख पर लिखकर गाढे हुए या मरे हुए जगह पर शिलालेख गाढ देते थे। ऐसी द्रविड देश में रीत थी। इस देश में रामानंद स्वामी गए,वहा एक बुढा इन्सान मरा था,तब रामानंदने लोगोसे पुछा,यह कितने सालका होकर मरा,वहाँके लोगोने कहा,यह पाँच वर्ष,दो महिने,छः दिन,ग्यारह घंटे,सोलह मिनट का हुआ है। वहाँ के लोगोने कहा इसने भजन इतने ही दिन किया है वही उसकी सही उमर हैं,बाकी की इसकी सब आयु व्यर्थ गई वह गिनी नही। इस देश में सभीकाही जन्म हुआ तबसे हिसाब रखा जाता है। भजन करता उतना समय हजेरीमें लिखा जाता है। जिस दिन मनुष्य भजन नही करता वह दिन उसका खाडा लिखा जाता है यह बात सुन लो। रामानंदने यह बात काशी में लायी किंतु रामानंदने इसकी किमत कुछ समझी नही। यह कथा कबीरजीने रामानंदसे सुनी और कबीरजी ने यह भुरकी प्रगट की कबीरजीने यह भुरकी सबमें डाली ।।७१।।

पीपा धना तिलोक दे सजना ।। सुरगुण करता भाई ।।
भुरकी की कळ कीमत आई ।। तजता वार न लाई ।। ७२ ।।

यह भुरकी पिपा में गिरी,धन्ना में गिरी। वह धन्नाजीके पर्ची में देखो। यह भुरकी तिलोकचंद में गिरी। वह तिलोकचंद पर्ची में देखो। सजन जातीका कसाब था वह पहले सगुण भक्ति करता था। इनको जब भुरकी की कला किमत मिली तब सगुण उपासना छोडकर निर्गुण याने राम नाम से लव लगा ली।।७२।।

सन्त दास स्वामी के भुरकी ।। गुरू अकास सुणाई ।।
माळा तजो भजो मुख रसना ।। प्रेमदास भल पाई ।। ७३ ।।

ऐसे ही संतदासने यह भुरकी आकाशवाणी से पायी। संतदास स्वामी जातके चारण थे और किरायेसे ऊँट ढोंनेका उनका व्यवसाय था। वे साठ वर्ष के हुए तब उनके मनमें ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि अब माला जपना। इनके पास ऊँट सबसे अच्छा होने के कारण दूसरे सब ऊँट वालोसे आगे उँट लेकर चलते थे। पहले दिन इनको मालाका भाव उत्पन्न हुआ और दूसरे दिन रास्तेसे चलते हुए इनको रास्ते में ही माला मिली तब संतदास ने उस माला को उठाके दूसरे सब ऊँटवालोंको माला हाथमें लेकर दिखाकर बोले कोई माला जपते हो तो माला मिली है। यह माला लो और रामनाम जपो,तब लोग मजाक से बोले,तुम अब बुढे हो गए हो,इसलिए तुम ही माला जपो। तब संतदासजी ने कहा हम ही माला जपेंगे ऐसा कहकर माला जपने लगे तब उनको आकाशवाणीसे ऐसा शब्द आया कि माला छोडकर रसनासे रामनामका भजन कर संतदासजी ने माला छोड दी व रामनाम की लीव लगा ली। आगे संतदासजी ने रामनाम जपने की भुरकी प्रेमदासजीको दी । ।।७३।।

दादु दर्यासा ले भुरकी ।। देखो दया बिचारी ।।
केता जीव अधोगत जाता ।। किया मोक्ष इधकारी ।। ७४ ।।

दादूसाहेब और दरीया साहब इन्होंने जगत के लोगोपर दया की और जगत के लोगोकी रामनाम की भुरकी दी। दादूसाहब और दरीया साहबने कितने ही अधोगती को जानेवाले जीवोंको मोक्ष का अधिकारी बनाया ।।७४।।

राहण शाह पुरा में भुरकी ।। पुन खेडापे जागी ।।
भ्रम क्रम सब का कर दुरा ।। राम रटण धुन लागी ।। ७५ ।।

यह भुरकी रेणमें जागृत हुयी । बहोतसे जिवोको दरीया साहबने यह रामनामकी भुरकी दी। यह भुरकी शहापुरा में रामचरणजीको और खेडापा में रामदासजी को मिली। इन सबका भ्रम और कर्म नष्ट हो गया व रामनाम की रसनासे ध्वनी लग गयी।।७५।।

राम नाम की भुरकी मेंरे ।। सब सन्ता ले धारी ।।
के सुखराम भक्त आ केवळ ।। आवागवण निवारी ।। ७६ ।।

जो पहले सब संतोंने धारण की थी,वही रामनाम की भुरकी मेंरे पास हैं। तो यह कैवल्य

भक्ति ऐसी है इसके योगसे आवागमन निवारन हो जाता है । ।।७६।।

भुरकी लेवे जके जन जीता ।। बिन भुरकी जम मारे ।।
के सुखराम भक्त आ अेसी ।। जम लोक जन तारे ।। ७७ ।।

जिन्होने जिन्होने यह भुरकी ली वे जन जीत गए। बाकी भुरकी न लेनेवाले को यम मारता हैं। यह कैवल्य की भक्ति ऐसी हैं कि यह भक्ति करनेवाले लोग यमलोगको भी तारके ले जाते है ।।७७।।

साध संगत जुग जुग में कीवी ।। जिण ये कारज कीना ।।
राम सन्ता बिना आन मनावे ।। केई करम का हीणा ।। ७८ ।।

जिन्होने जिन्होने साधूका सत्संग जगत में की उन्होने उन्होने अपना कार्य कर लिया। जो संत रामनाम के सिवा अन्य भक्ति बताते है वे सब संत भाग्यहीन हैं। ।।७८।।

क्रम हीण जांहाँ क्रोड बिघन हे ।। साध संगत सुं लाजे ।।
के सुखराम जके हर बेमुख ।। भुरकी कह कह भाजे ।। ७९ ।।

जो भाग्यहीन है उनपर सो लक्ष संकट आकर गिरेंगे। वे साधुका संग करने में शरम करेंगे और भुरकी बोल बोल के भागेंगे वे हरीसे बेमुख हैं ।।७९।।

कळ जुग को ध्रम राम नांव हे ।। ओर ध्रम नही चाले ।।
कह सुखराम जके क्रम हीणा ।। राम शिंवर ता पाले ।। ८० ।।

इस कलीयुग में कलीयुग का धर्म रामनाम हैं। इस कलीयुग में रामनाम के सिवा दूसरा धर्म चलेगा नही। जो रामस्मरण करनेको मना करते है वे कर्महीन है वे भाग्यहीन हैं। ।।८०।।

जीण भुरकी ली तिन कुं दीनी ।। भरम करम सब खोया ।।
कह सुखराम पाप हुवा परले ।। लेत करम सब रोया ।। ८१ ।।

यह भुरकी खुदने लेकर दूसरोंको दी उन सभीके सब भ्रम,कर्म गल गए। यह भुरकी जिन्होने,जिन्होने ली उनके उनके सब पापो का प्रलय हुआ और उन्होने पहले किए हुए कर्म गलने लगे ।।८१।।

स्वान काग सुकर जग सारो ।। हंस बिरती नही जाणे ।।
नीर खीर का न्याव सुणे जब ।। निन्दक निन्दा ठाणे ।। ८२ ।।

इस जगतके मनुष्य कुत्ते की बुध्दी कौएकी बुध्दी और सुअर की बुध्दी जैसे है। वे हंस की वृत्ती कुछ जानते नही। ये संसार के लोग निर क्षिर याने दुध और पानी को अलग अलग कर निर्णय सुनते तब ये निंदक लोग इस निर्णय की निंदा करते ।।८२।।

।। चोपाई ।।

समत अठारा बरस चोईसे ।। सतगुरू किरपा कीनी ।।
कह सुखराम भाग धिन मेंरा ।। सतगुरू बिरम दीनी ।। ८३ ।।

समंत अठरा वर्ष चोवीस में सदगुरू ने कृपा की। सदगुरू सुखरामजी महाराज का भाग्य

धन्य हैं जिनको बिरमदासजी महाराज ने दी ।।८३।।

राम नाव की भुरकी मेंरे ।। पारायण को जीव ।।
के सुखराम हरक कर लेवे ।। तो मिले निरंजन पीव ।। ८४ ।।

यह भुरकी पारायण की जान हैं। इस भुरकी को कोई हर्षसे लेगा तो वे निरंजन मालिकसे जाकर मिलेंगे ।।८४।।

भुरकी है भव तारणी ।। चौरासी है छन्द ।।
पढ्या सुण्या कट जावसी ।। चौरासी को फन्द ।। ८५ ।।

यह भुरकी इस भवसागरसे तारनेवाली हैं। इस भुरकी के योग से पिछे चौऱ्यांशी फंद बनाए हैं। इस भुरकी को कोई सिकेगा या सुनेगा,उसके चौऱ्यांशी के फंद छुट जायेंगे।। ८५ ।।

।। इति भुरकी ग्रंथ का भाषांतर संपूर्ण ।।